मूल्य रु. ५-००

श्री स्वामिनारायण मासिक

प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महीने की ११ तारीख सलंग अंक १०२ अक्टूबर-२०१५

श्री स्वामिनारायण मंदिर स्ट्रेधाम (यु.के.) द्विदशाब्दी महोत्सव

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१.

(१) अमदावाद मंदिर में परंपरागत जलझीलणी श्री गणपतिजी की शोभायात्रा में प.पू. आचार्य महाराजश्री की उपस्थिति में उत्सव करते हुये उत्सव मंडल तथा नारायणघाट मंदिर में श्री गणपतिजी की आरती उतारते हुये प.पू. लालजी महाराजश्री ।(२) जन्माष्टमी प्रसंग पर श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में ठाकुरजीकी आरती उतारते हुये प.पू. लालजी महाराजश्री तथा रास करते हुये संत-हरिभक्त ।(३) गणेश चतुर्थी के दिन अमदावाद मंदिर में श्री गणपतिजी का दर्शन ।(४) नारायणघाट मंदिर में जन्माष्टमी उत्सव प्रसंग पर आरती उतारते हुये महंत स्वामी देवप्रकाशदासजी ।(५) जलझीलणी एकादशी को कांकरिया मंदिर के संत-हरिभक्तो कांकरिया सरोवर में श्री गणपतिजी की आरती उतारते हुये ।(६) बालासिनोर में कथा करते हुये शा.स्वा. छपैयाप्रसादजी तथा सभा में जे.पी. स्वामी , जे.के. स्वामी तथा विश्वविहारी स्वामी ।

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र
वर्ष - ९ ● अंक : १०२
अक्टूबर-२०१५

संस्थापक
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ ● फोक्स :
२७४१९५९७
प.पू. मोटा महाराजश्री के संपर्क के लीए
फोन : २७४९९५९७
www.swaminarayanmuseum.com
दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स : ०७९-२७४५२१४५
श्री नरनारायणेदव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (महंत स्वामी)

पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
दूर ध्वनि २२१३२१७०, २२१३६८१८.
फोक्स : २२१७६९९२
www.swaminarayan.info
पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

अ नु क्र म णि का

०१.	अस्मदीयम्	०४
०२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा	०५
०३.	बलदेवजी का परिणय जेतलपुर में करवाये	०६
०४.	श्रीहरिके मुख से निर्गत अमृतवचन पर एक दृष्टि	०८
०५.	अच्छे लोगों की यह नीति नहीं है	१०
०६.	श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से	१२
०७.	सत्संग बालवाटिका	१४
०८.	भक्ति सुधा	१६
०९.	सत्संग समाचार	१९

मूल्य - प्रति वर्ष ५०-०० ● प्रति कोपी ५-००

अस्मदीयम्

हजारो वर्ष पूर्व ऋषिमुनि भगवान को प्राप्त करने के लिये वर्षो वर्ष तक तप करते थे । कितने तो वायु का भक्षण करके तप करते थे फिर भी भगवान को नहीं प्राप्त कर सके । जब कि हम सभी का भगवान स्वामिनाराण हमारे घर में आकर कल्याण कर दिये है । अपना यह मनुष्यजन्म सार्थक हो गया है । ऐसे सत्संग में जन्म हुआ जिससे श्रीजी महाराज प्रत्यक्ष मिल गये । यह तभी संभव होता है जब अनेक जन्मो ता पुण्य एकत्रित होता है । अपनी भाग्य भी साधारण नहीं है, इसलिये भगवान की भझन करते रहना चाहिए और ऐसी उपाय करनी चाहिये कि अपनी चित की वृत्ति सदा श्रीहरि के स्वरुप में लगी रहे । भगवान के स्वरुप में अखंड वृत्ति रहने की क्या उपाय है ? इसकी उपाय चार प्रकार से है । तेमां एक तो जेना चित्त नो स्वभाव चोटवानो होय ने ज्यां चोटाडे त्यां चोंटी जाय । ते जेम पुत्र कलत्रादिमां चोंटे छे तेम परमेश्वरमां पण चोंटे । माटे एक तो उपाय छे । अने बीजो उपाय ए छे जे अतिशय शूरवीरपणुं, ते शूरवीरपणु जेना हैयामां होय ने तेने भगवाने वीना वीजो घाट थाय तो ते पोते शूरवीर भक्त छे माटे तेना हृदयमां अतिशे विचार उपजे । ते विचार करीने घाट मात्र टालीने अखंड भगवान ना स्वरुपमां वृत्ति राखे छे । अने तीजो उपाय – ते भय छे । ते जेना हृदयने विषे जन्म, मृत्यु तथा नरक की अत्यन्त भीति रहती है, इससे डर कर भगवान में अखंड वृत्ति रखे छे । अने चौथो उपाय ते वैराग्य छे । ते जे पुरुष वैराग्यवान होय ने सांख्य शास्त्रने ज्ञान करीने देह थकी पोताना आत्माने जुदो समझीने ते आत्मा विना बीजा सर्व मायिक पदार्थ असत्य जाणीने पछी आत्माने विषे परमात्माने धारीने तेनुं अखंड चिंतवन करे अने ए चार उपाय विना तो जेना पर भगवान कृपा करे तेनी तो वात न कहेवाय पण ते विना बीजा तो अनंत उपाय करे तो पण भगवान ने विषे अखंड वृत्ति रहे नहीं ।(व.ग.म. ३६)

प्रिय भक्तों ! हम इस वचनामृत में से भगवान में अखंड वृत्ति रहने की उपाय समझे तथा आगे भी अखंड वृत्ति बनी रहे ऐसी उपाय करते रहना चाहिये ।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

श्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(सितम्बर-२०१५)

१० अमेरिका यु.के. के धर्म प्रवास से स्वदेश पदार्पण।

१८ प.भ. जतीनभाई पटेल तथा श्री यतीनभाई पटेल - (विमल प्लास्टरवाला) के यहाँ पदार्पण, मणीनगर।

२४ श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर-अमदावाद जलझीलणी एकादशी को गणपतिजी के शोभायात्रा में पधारे।

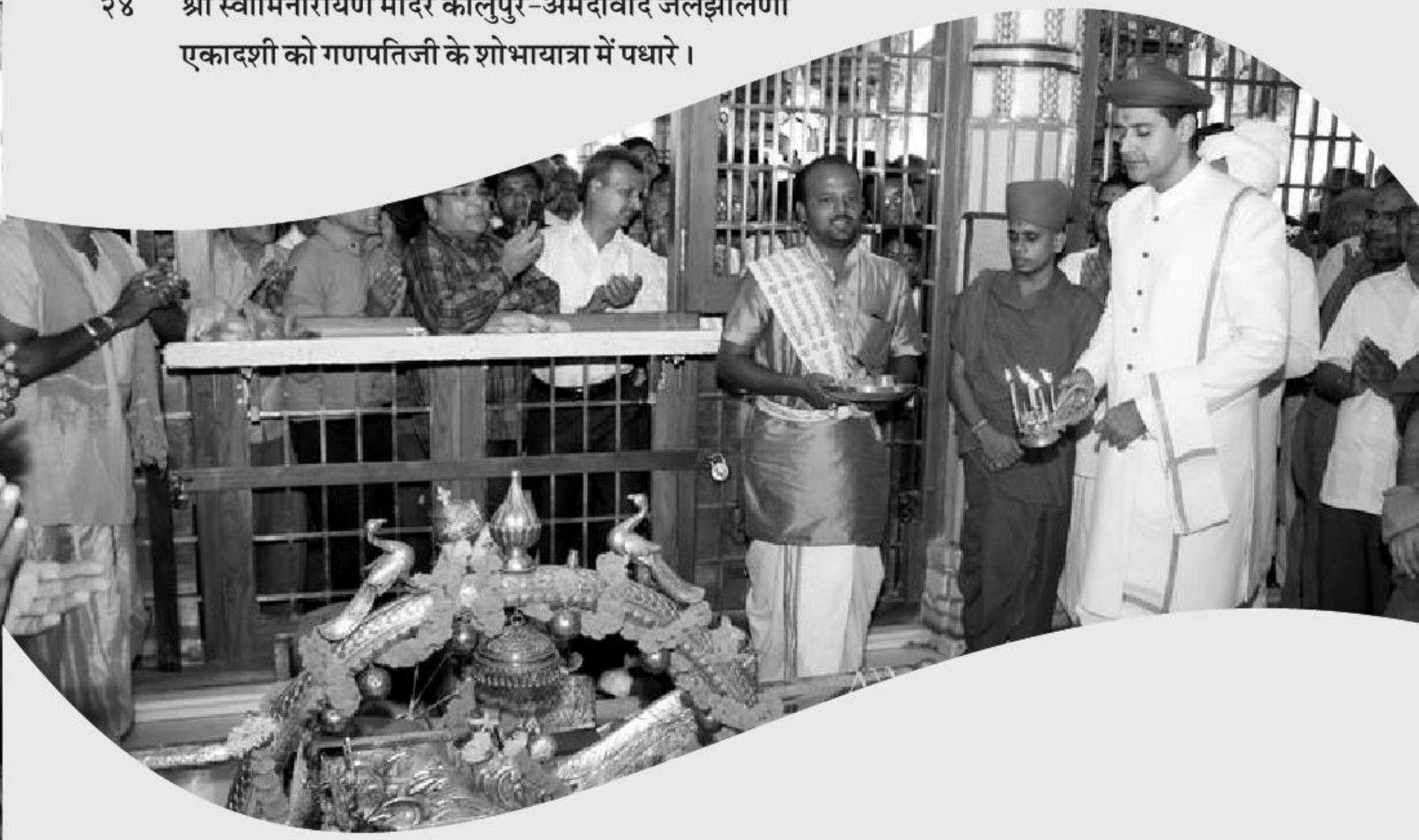

श्री नरनारायणदेव के २४ कलाक दर्शन के लीये देखिये वेबसाईट

www.swaminarayan.info

www.swaminarayan.in

भारतीय समय अनुसार आरती दर्शन : मंगला आरती ५-३० • शृंगार आरती ८-०५ • राजभोग आरती १०-१० • संध्या आरती १८-३० • शयन आरती २०-३०

बलदेवजी का परिणय जेतलपुर में करवाये

- साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास
(जेतलपुरधाम)

स.गु. आनंदानंद स्वामीने श्रीजी महाराज की आज्ञा से जेतलपुर में मंदिर का काम बड़ी तेज गति से प्रारंभ किये । शिखर का काम बाकी था। स्वामीने महाराज के पास संदेश भेंजा कि मंदिर का काम पूर्ण होने वाला है, आगे के कार्य हेतु आप आज्ञा करें।

श्रीहरि विचरण करते हुये जेतलपुर पधारे । मंदिर देखकर खूब प्रसन्न हुये। मंदिर स्वामीने बड़ा अच्छा बनवाया है । जेतलपुर गाँव के भक्तों की तथा गंगामां की प्रशंसा किये।

मंदिर में किस स्वरुप को प्रतिष्ठित करना है महाराज से आनंदानंद स्वामीने पूछा । श्रीहरिने कहा, स्वामी आप की रुचि बलदेवजी में अधिक रहती है। पूर्वाश्रम में भी आप बलदवेजी के दो मंदिर बनवाये थे । इसके अलांवा जेतलपुर की भूमि बलदेवजीको अतिप्रिय है। इस देवसागर के तटपर बलदेवजी का तथा रेवतीजी का विवाह संस्कार हुआ था। इसके अलांवा द्वारिका से वृन्दावदन आते जाते बलरामजी देवों के साथ कई दिन तक विश्राम भी किये थे । श्रीमद् भागवत के नवमें स्कन्धमें एक प्रसंग आता है कि शर्याति राजा को आनर्त नाम का एक पुत्र था। उसे खेतनामका पुत्र हुआ, वह समुद्र में नगरी वसाकर निवास किया और आनर्त देश का राज्य करता था। उसको कुकुदमी नामक पुत्र से रेवती नामक पुत्री हुई । वह अत्यन्त सुन्दर तथा स्वभाव में सद्गुणी, संस्कारी, शीलवती थी। वह कन्या विवाह के योग्य हुई तो बहुत सारे राजाओं के यहाँ से सम्बन्धके लिये सन्देश आते । पुत्री के योग्य वर न मिलनेप र कुकुदमी देव कोटिका होने से अपनी पुत्री को लेकर ब्रह्मलोक ब्रह्माजी के पास गया । उस समय देवलोक में गन्धर्वो का संगीत गान चल रहा था । उस समय पूछने का अवसर नहीं मिला, वह भी उसी सभा में बैठ गया। संगीतपूर्ण होते ही कुकुदमी अपनी बेटी के साथ ब्रह्माजी को प्रणाम किया और बेटी के विवाह की वात की। तब ब्रह्माजी हंसते हुये कहे कि राजन्। आप जिस तरह के पति की इच्छा करके बैठे हैं उसमें से कोई जीवित नहीं है, आप के पृथ्वी लोक का २७ चौकडी बीत चुका है । कारण यह कि मृत्यु लोक तथा ब्रह्मलोक के समय में एक क्षण एक युग के समान होता है। फिर भी आपकी पुत्री के लिये वर्तमान में भगवान श्री कृष्ण के बडे भाई संकर्षण - बलरामजी विवाह के योग्य हैं। वे आपकी पुत्री के साथ विवाह करेंगे।

ब्रह्माजी का वचन सुनकर आनर्त देश के रैवत राजा के पुत्र कुकुदमी अपने राज्य में वापस आया। वहाँ तो सभी कुछ नाश को प्राप्त हो गया था। द्वारिका में बलरामजी के साथ पुत्री का पाणिग्रहण हो ऐसी प्रार्थना की। बलरामजी सहर्ष अनुमति प्रदान कर दिये। क्योंकि बलरामजीकी अपेक्षा भगवान कृष्ण को अधिक जल्दी थी। बडे भाई के संस्कार के बाद ही छोटे भाई का नम्बर आता है।

विवाह स्थल का विचार किया जा रहा था, विवाह स्थल सुरक्षित होना चाहिए। क्योंकि जरा संधयह जान रहा था कि

बलराम-श्रीकृष्ण प्रहर्षण पर्वत में अग्निदाह के समय भष्म हो गये। अब उसे विवाह का पता चल जाय तो विघ्न डाल सकता है। उसी समय नारदजी आ पहुंचे, ककुदमीने नारदजी से विवाह का स्थल पूछा तो नारदजीने साबरमती के तट पर आई हुई देव सागर की भूमि को अति पवित्र बताई। जहाँ पर लाखो ऋषि मुनि लाखों वर्ष तक तप किया है। ऐसे स्थल पर शत्रुओं का नाश तत्काल हो जाता है। देवसागर के तट पर विवाह कीजिये, ऐसा कहकर नारदजी वहाँ से चले गये।

राजा ककुदमी अपनी पुत्री रेवती के विवाह का मंडप देवसागर के किनारे बनावाया। भगवान द्वारकाधीश अपने बडे भाई के विवाह प्रसंग पर अपने छप्पन कोटि यादवों के साथ माता-पिता को लेकर पधारे। वीणा बजाते हुए नारदजी स्वर्ग में देवों को बलराम के परिणय संस्कार की बात सुनाई। तीनो देव तैंतीश कोटि देवों के साथ विवाह स्थल पर पधारे। विश्वकर्मा आगन्तुकों के लिये भोजन की व्यवस्था, कुबेरजी धन की व्यवस्था, इन्द्र-चंद्र, वरुण इत्यादि अष्ट सिद्धइ तथा नवनिधिके साथ हाजिर हुये। गन्धर्व गान करने लगे। चारो वेद का पाठ होने लगा। ऋषि-मुनि, दिग्पाल, वसु, ग्रह मंडल के अधिष्ठातृदेवत। चारवेद, पुराण देव रुप धारण करके पधारे। चार गाँव में मंडप की व्यवस्था की गई थी। मंडप की अद्‌भुत शोभा हो रही थी। ध्वजा- पताका, तोरण, बन्दनवार, केला के खम्भे इत्यादि शोभा के साधन बने थे। जिस व्यक्ति को जैसा भोजन चाहिये वैसी व्यवस्था की गई थी। विद्याधर भगवान संकर्षण की प्रशस्तिगान करने लगे। भगवान जिनके भाई हों उनके प्रसंग में कौन नहीं आयेगा ?

सर्व प्रथम देव सागर के जल से संकर्ष चरणों को प्रक्षालित किया गया। तैल-हरिद्रालेपन का कार्य संपन्न किया गया। बाद में शुभ मुहूर्त के समय कन्या - वर को मंडप में लाया गया। वेद मंत्र पाठ के साथ विवाह में फेरे होने लगा बलरामजी की चारो दिशाओं में जय-जयकार होने लगी। राजा ककुदमी अपने पुत्री का कन्यादान देव सागर के किनारे किये। ब्राह्मणों को सोना-मोहर का दान दिया गया। अनेकों गायें दान दी गई।

रोते हृदय से अपनी पुत्री को विदा कर के स्वयं बदरिकाश्रम में श्री नरनारायण के सांनिध्य में तपश्चर्या करने चले गये।

देवसागर कालान्तर में जब छोटा होता गया तो देवसरोवर के नाम से जाना जाने लगा। देव सरोवर के पश्चिम तट पर इन्द्रपुर नामका गाँव था। वह जेतलपुर धाम का श्रृंगार देव सरोवर महातीर्थ हैं।

श्रीजी महाराज ने कहा कि श्री बलदेवजी को यहाँ की भूमि अति प्रिय है, इस लिये उन्हीं की मूर्तिकों यहाँ प्रतिष्ठित करते हैं। लेकिन बलदेवजी की मूर्ति कहाँ से आयेगी ? ऐसा कहकर गंगा मां के सामने देखने लगे। गंगा मां ने कहा कि हमारे पिताजी के पास बलदेवजी, रेवतीजी तथा लक्ष्मणजीकी मूर्तियां हैं।

आप ले आइये उन्हीं मूर्तियों को यहाँ पर प्रतिष्ठित कर देते हैं। गंगामां हमारी तथा सत्संगकी मां हैं। कितना भी कठिन कार्यो हो उसे वे सरल कर देती थी। जेतलपुर से तीन गाडी लेकर हरिभक्तों के साथ गंगामां अपने पिता के घर नारदीपुर गई। पिता भूदर महेता के पास मूर्तियों की मांग की। पुत्री की बात को कोई पिता पूरा नहीं किया हो ऐसा इतिहास में कहीं नहीं मिलता। इसलिये पिता भूदरभाई अपनी सेवा की तीनों मूर्तियों को गाजे-बाजे के साथ गाडी में लाकर रखवा दिये।

दो दिन में ही मूर्तियों को लेकर गंगामां जेतलपुर के पास असलाली गांव तक पहुंची हैं, ऐसा समाचार मिलते हैं महाराज संत भक्तों के साथ वहाँ पहुँचकर स्वागत-पूजन किये। वहां से गाजे बाजे के साथ जेतलपुर ले आये।

मूर्तियों को देखकर महाराजने कहा कि जैसी मनमें चाहना थी वैसा ही स्वरुप सामने से चलकर जेतलपुर आ गया है। बलरामजी को द्वारका से अधिक जेतलपुर की भूमि प्रिय है। संवत १८८७ फाल्गुन वद-८ अष्टमी के शुभ मुहूर्त में मंदिर के

पेईज नं. ११

श्री स्वामिनारायण

श्रीहरिके मुख से निर्गत अमृतवचन पर एक दृष्टि

संकलन : गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापुनगर)

भगवान श्री स्वामिनारायण ने अपने अक्षरधाम में से मनुष्य शरीर धारण करके इस पृथ्वी लोक में आकर यहाँ के जीवों का ही नहीं अपितु स्वर्गोयिजीवों का बहुत बड़ा उपकार किया है। लेकिन मनुष्यका स्वभाव है कि स्वयं अपने से दु:ख पैदा करता है। उसे यह पता रहता है कि यह अग्नि है, इसमें हाथ डालने से जल जायेंगे, फिर भी कितने उल्टी मतिवाले होते हैं, जिन्हे हाथडाले विना संतोष नहीं होता।

श्रीजी महाराजने वचनामृत में बड़े पुरुष के गुण तथा अवगुण को ग्रहण करने से क्या लाभ तथा क्या हानि होती है इसको बताया है। महाराज के शब्द है - कि "बड़े पुरुष केगुण को जैसे-जैसे ग्रहण करते जांय वैसे-वैसे उनकी भक्ति में वृद्धि होती जाती है। इसके अलांवा जो इससे भी बड़ी मनुष्य हो उसे निष्कामी समझाजाय तो स्वंय कुत्ते की तरह कामी होने पर भी निष्कामी हो जाता है। यदि बड़े पुरुष के विषय में कामीपना का भाव आजाय तो चाहे कितना भी निष्कामी हो तो भी वह स्वयं कामी होजाता है। यदि बड़े पुरुष के विषय में क्रोधी-लोभीपना का भाव आवे तो वह स्वयं क्रोधी-लोभी हो जाता है। यदि बड़े पुरुष के विषयमें निष्कामी निर्लोभी, नि:स्वादी, निर्मानी, नि:स्नेही समझे तो स्वयं भी वह सर्व विकार से रहित होकर पक्का हरिभक्त हो जाता है। इसके बाद महाराजने पक्के हरिभक्तों के लक्षण बताया है। जो पक्का हरिभक्त होगा वह परमेश्वर के दास का गुलाम होकर रहेगा। वह सभी को बड़ा माने तथा स्वयं को सबसे न्यून माने और स्वयं को दासानुदास समानकर व्यवहार करे। इस प्रकार जो वर्तन करे उसके सभी विकार नष्ट होजाते हैं। इसके अलांवा दिन प्रतिदिन ज्ञान-वैराग्य-भक्ति इत्यादि शुभ गुण में वृद्धि होने लगती है।

वडताल के ११ वें वचनामृत में श्रीहरि कहते है कि भगवान या भगवान के भक्त, ब्राह्मण या गरीब मनुष्य का जो द्रोह करे तो करने वाले का नाश हो जाता है। अन्त में द्रोह करने वाला पर्वत या अन्य कोई जड वस्तु बनता है। ऐसे जीव का कभी कल्याण नहीं होता। भगवान के भक्त ऐसे ब्राह्मण का जो द्रोह करता है उसका सभी जगत के लोग द्रोह करते हैं। इसलिये कि "ब्राह्मणो मामकी तनु:" इस वचन के अनुसार ब्राह्मण भगवान की शरीर है। इसलिये ब्राह्मण का द्रोह नहीं करना चाहिये, संभव होतो यथा शक्ति पूजा करनी चाहिए। पवित्र तथा ज्ञानी ब्राह्मणों की सेवा करनी चाहिये। सेवा से संतुष्ट ब्राह्मण सभी मनोरथ को देनेवाला होता है। ब्राह्मण के प्रसन्न होने पर भगवान प्रसन्न होते हैं।

बड़े सत्पुरुष, ब्राह्मण, भगवान या भगवान के भक्त का द्रोह करने वाला इसलोक में नारकी होता है या नरकजैसी पीडा को भोगता है। मरने के बाद भी वह दारुण दु:ख पाता है। इसके बहुत सारे शास्त्रों में प्रमाण मिलते हैं। जो दूसरों को दु:ख देता है वह वापस उसे ही पीडा कारक होता है। एक ब्राह्मण के श्राप से जला हुआ दूसरा सभी जीवों को भंय देनेवाल का कभी कल्याण नहीं होता। नरक का कीडा भी उसका स्पर्श नहीं करता। इसलिये यह सदा विचार करते रहना चाहिये कि वह किसके ऊपर धूल फेंक रहा है।

द्वारका के भगवान के समय में श्री ब्राह्मण का

अनजान में भी अपराधहो जाने से महान पुण्यवान नृगराजा को गिरगिर को देह धारण करनी पडी थी । इतना ही नहीं अन्धकूप में बहुत काल तक रहना पडा था ।

सत्संग के भीतर या बाहर जो भी असंतुष्ट आत्मा अथवा उनके जैसे लोगो को काम, क्रोधलोभ, ईर्ष्या, मान, अहंकार इत्यादि अंत:शत्रु घेर लेते हैं । जो धर्मवंशी में कामादिक दोष देखते हैं उनका जीवन पीलिया के रोग जैसा ही सर्वत्र अपने जैसा दिखाई देता है।

श्रीहरि कहते है कि विषवृक्ष तथा कल्पवृक्ष के समान धर्मवंश तथा अन्य वंस में अन्तर है । जो लोग दोनो को एक जैसा मानते हैं वे बुटिसत बुद्धिवाले हैं । उन्हें वासुदेव से विमुख समझना चाहिए ।

धर्मवंशी आचार्यश्री या भावि आचार्य के विषय में बात करें तो यह निर्विवाद सत्य है कि वे श्रीहरि के अपर स्वरुप हैं । इसीलिये स्तसंग आज हजारों कीलोमीटर दूर तक देश-विदेश में भ्रमण करते हैं । सामान्य लोगों का यह सामर्थ्य नहीं है । दूसरी वात यह है कि पवित्र धर्मकुल में भगवान के पुत्र के रुप में प्रगट हुए हैं । ज्ञानी तथा पवित्र ब्राह्मण हैं । भगवान के उत्तम भक्त हैं । जिनके रोम रोम में श्रीहरि के द्वारा प्रतिष्ठित श्री नरनारयणदेव की निष्ठा प्रतिष्ठित है । इसलिये प्रत्येक सभाओं में श्री नरनारायण देव का प्राधान्य स्थापित करते रहते हैं । इस ब्रह्मांड में ऐसा कोई व्यक्ति नहीं होगा जो सभी पूर्णता एक में हो । इसतरह जो ऐसे महानुपुरष में कामादिक विषयों को देखे तो उसका सर्वनाश निश्चित हैं । स्वभाव से भी धर्मकुल अन्तन्त भोला है, इन्हें कोई ढक न जाय इसका ध्यान रखना हम सभी का कर्तव्य है । पूर्व में जिन चारों के द्रोह करने से या चार में से किसी एक का द्रोह करते हैं तो निश्चित ही उसका सर्वनाश होता है।

यह धर्मकुल इतना उदार तथा पवित्र है कि अज्ञानी तथा कपटी या बाह्याडम्बर वाले व्यक्ति इनके ऊपर कितना भी धूल उडावें प्रतिकार नहीं करते । फिर भी सनातन सत्य यह है कि कोई निर्दोष तथा उदारशील व्यक्ति की हानि करने की भावना रखता है तो श्रीहरि उसे क्षमा नहीं करते । मनुष्यका पाप उसे खाजाता है । धर्मवंशी आचार्यश्री जब मूर्ति प्रतिष्ठा करते हैं तब मूर्तिमें भगवान प्रत्यक्ष विराजित हो जाते हैं । जब त्यागी को साधु की दीक्षा देते है तब श्रीहरि उन्हें अपना साधु मानते हैं । उन्हीं के मुख से गृहस्थ को जब गुरु मंत्र मिलता है तभी भगवान की भजन का अधिकार मिलता है । शास्त्रों में सच्चे संत के जितने लक्षण बताये गये हैं, वे सभी धर्मवंशी आचार्य में मिलता है । गृहस्थ पद का वहन करते हुये सत्संग के लिये रात-दिन विचरण करते रहते हैं । यह कोई छोटी बात नहीं है । फिर भी लोग अड़चन डालते रहते हैं । संप्रदाय की प्रगति बाधक होते हैं, कभी किसी पर कलंक का आरोप करते हैं । अकरणीम करने के योग्य बातकर सत्संग को बदनाम करते हैं । इससे मनुष्य में भ्रामकता फैलती है । इस भ्रम उत्पन्न करने से अधिक कोई पाप नहीं है । किसी एक व्यक्ति को सत्संग में से अलग करने से एक ब्रह्मांड नष्ट होने का पाप लगता है । लेकिन हम भाग्यशाली है कि श्रीहरि संप्रदाय का मूल पाताल तक डाला है । इस मूल संप्रदाय को कोई उखाड नहीं सकता । सत्संग बढे या घटे यह सब श्री नरनारायणदेव के हाथ में है । भगवान के अपर स्वरुप का कोई द्रोह करे या प्रशंसा करे इससे उनमें कोई फर्क नहीं पडता । परंतु द्रोह करने वाले का निश्चित ही सर्वनाश होता है । इसलिये भगवानने अमूल्य मानव शरीर दिया है तो भगवान की भजन में ही मन लगाना चाहिए, उसी में बुद्धि को लगाना चाहिए, न कि, किसी को अपमानित माता राज करके कृतध्नी बनना चाहिए ।

संप्रदाय का गौरव

श्री नरनारायणदेव के अनन्य निष्ठावान प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के कृपापात्र कच्छ के प.भ. नारणभाई भीमजीभाई हालाई को कार्डिफ में (यु.के.) इन्सपेक्टर ओफ टेक्सीस के रुप में यु.के.की गवर्नमेन्टने संमानित किया है । वेत्स में ऐसा पद प्राप्त करने वाले वे प्रथम व्यक्ति हैं । इग्लेन्ड में ऐसा स्थान प्राप्त करने वाले ये प्रथम कच्छी है । १९९१ से वे टेक्सईन्वसस्टीमेशन कन्सल्टन के व्यवसाय में लगे थे । इससे पूर्व इ.स. २००८ में मेम्बर ओफ द और्डर ओफ द ब्रिटिश एम्पायर (M.B.E.) कविन्स बर्त डे ओनर दिया गया था । वे धार्मिक प्रवृत्ति के साथ अनेक सेवा में भी प्रवृत्त हैं । उनके ऐसे गौरवशाली समाचार से प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री उनके ऐसे कार्य पर प्रसन्न होकर उत्तरोत्तर प्रगति के लिये आशीर्वाद देते हैं ।

अच्छे लोगों की यह नीति नहीं है

- अतुल भानुप्रसाद पोथीवाला (अहमदावाद)

(दलपत शृंखला-७)

दलपतराम पढकर तैयार हो गये । श्रीहरि को हृदय में रखकर सत्संग का पक्ष रखकर स्वंय अभ्यासी बनकर अभ्यासपुरा किये । सद्‌गुरु लोग इनके ऊपर खूब प्रसन्न रहते थे । इन का जीवन आदर्श बनता गया । वे धर्म सिद्धआतं के अनुसार जीवन जीनेवाले थे । दलपतराम के दो मनोरथ थे - (१) काव्य शास्त्र में धर्म की स्थापना तथा (२) नायिकाभेद विभत्स रसना उत्थापन । उन दिनो साहित्य में बिभत्सरस की खूब बोलबाला थी । श्रृंगार रस के बहाने अश्लीलता का व्यवहार किया जाता था । श्रीहरि के वचनामृतों को आत्मसात करने के बाद दलपतराम को हुआ कि ''साहित्यक्षेत्र में विभत्स का प्रचार करके समाज की कुसेवा तो नहीं हो सकती । संप्रदाय को लज्जित करने वाली वात होगी । स्वामिनारायण का सत्संगी विना गारे पानी भी नहीं पीता । इसीलिये दलपतराम नवरसों को गार-गार कर पीछे थे । प्राकृत तथा संस्कृत रस शास्त्र दलपतराम स्वामिनारायण के साधुओं से पढे थे । संत भी उन्हें अपना समझकर ही तैयार किये थे । दलपतराम की श्रृंगारिक रचना मर्यादित थी । वह गृहस्थ श्रमियों के दाम्यत्यजीवन में परि समाप्त होती थी । वे अपने श्रृंगार रस नामक काव्य में रामसीता के स्नेह का वर्णन सौम्यभाव से किये है । राम वनवास के प्रसंग पर दलपतराम के वे पद उस समय तथा आजभी गुजरात की नवकविता में दाम्पत्यप्रेम का विरलकाव्य कहा जाता है । दलपतराम में स्त्री दाक्षिण्य की भावना सर्वोत्तम थी । **"माराथी नानेरीओ ए सहु, मारी पुत्रीओ ने मारी, सरीखवी समाणीओ ए सर्वे मारी भगिनिओं छे."** दलपतराम के जीवन का यह श्रेष्ठ सूत्र था । किसी ने लिखा है कि - **सहुनो सालो सहुनो सासरो छे, द्विज दलपतराम शोभा शीयल नी ।**

गुर्जर सुंदरीओ के विषय में दलपतरामने लिखा है कि-

हुं तमारो वडो धर्मनो वीर छुं ।

अपनी कविता लक्ष्मी को स्त्रारीओ समर्पित करते हुये कहते हैं कि -

वीनरी आ गणो वीरपसली ।

दलपतराम जब स्वामिनारायण धर्म स्वीकार कर लिया तब अपने घर आकर विभत्स रसवाली दो कृतियों को ''हीरादन्ती तथा ''कमललोचनी'' को अग्नि में जला दिया ।

अनीति को उत्तेजित करने वाली कविताओ वे धिक्कारते हैं । और अपनी काव्य धारा को आगे करके सचेत भी करते हैं -

"काजल को टडी मां वारे वारे विचरती,
अरे ओ कलम ! तने विनंती हुं करुं छुं
श्याम मुखताली पण श्वेत तणी संगति मां,
भाणी तने आज तारो भरोंसो हुं भरुं छुं."

दलपतराम की व्याख्या अत्यन्त नीति से परिपूर्ण थी-

बेटी बहनो पितृभ्रात पासे,
जे बोलतां बोल बहु लजाशे,
एवुं लखवे ते कहिये अनिति,
रुडा जनोनी नहि एहनीति

कितने सुंदर विचार हैं । जो भाषानो लते पिता या भाई के समक्ष बहन या बेटी शरमाती थी । ऐसे शब्द जो दो अर्थ वालें हों उसे बोलना - लिखना अनीति की वात है । विद्वान - संस्कारी ऐसी भाषा नहीं बोल सकते हैं, नहीं लिख सकते हैं । नीति से पूर्ण दलपतरामकी कविता होती थी । दलपतरामकी शरीर विलय हुये (२५-३-१८९८) तीस वर्ष के बाद इ.स. १९२७ में महाराष्ट्र की महानगरी पूना में मराठी साहित्य का संमेलन हुआ । अच्युतराव कहोलटकर सभाध्याक्ष थे ।

दक्षिण भारत की साहित्य परिषद में सभी महिलाओं ने विरोधकिया। बाद में अश्लील काव्य रचना की समाप्ति हो गई।

दलपतराम का वह उद्घोषणा वर्षो के बाद भी सर्वानुमतिसे पारित कर दिया गया। नीति की विजय हुई।

दलपतराम का तीसरा मनोरथ था गुजराती तथा गुजरात की कीर्ति को प्रकाशित करने का विचार था। उन दिनो व्रजभाषा राज्य दरबार की काव्य भाषा थी । दलपतराम व्रजभाषा में ही पिंगल तथा अलंकार शास्त्र पढे थे। शीध्र कवि के रुप में उन्हें प्रतिष्ठा मिली थी। व्रजभाषा में ''शाकोत्सव'' तथा ''श्री पुरोत्सव'' ये दो काव्य गुजराती भाषा में लिखे। आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी महाराज की आज्ञा से संस्कृत का अभ्यास किये फिर भी गुर्जर गिरा के प्रति दलपतराम की कितनी अटूट भक्ति थी। दलपतराम ने स्पष्ट लिखा है कि ''उस समय के संस्कृताचार्य भी गुर्जर वाणी का ही अनुकरण करते थे।

दलपतराम की दृढ आस्था थी कि हरि की इच्छा के विना कुछ भी संभव नहीं है.

"ईश्वर की लीला तणों ग्रंथ आ आदरुं छुं"

स्वयं की काव्य कला में दलपतराम को श्रद्धा थी । दलपतराम जितना पढे थे उतना आज के युग में कोई पढा नहीं होगा। वे ऐसा मानते थे कि काव्य कला ईश्वरदत्त है। राजेन्द्र या कवीन्द्र तो मात्र सिक्का है।

दलपतराम का चौथा मनोरथ था - राज कवि होने का। राजा कवि होने के लिये विधातृ का लेख तो था ही। राजदरबार का नहीं लेकिन नवसंस्कृति के राजकवि होने का ब्रह्म बोलना।

उपरोक्त चारो मनोरथ पूर्ण करने के लिये दलपतराम खूब प्रयास किये। प्रारब्धभी आगे- आगे चल रहा था। फिर भी आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री का सानिध्य, प्रेमानंद स्वामी, शुकमुनि जैसे संतो का सहवास तथा समाधिसिद्ध योगि पुरुष गोपालानंद स्वामी का सत्संग यह सबकुछ उन्हे जीवन प्रवास मे मिलता गया । संभव है कि महापुरुषों के प्रताप से दलपतराम की कविता खिलती गयी। दलपतराम नवसंस्कृत के राजकवि बन सके।

जीवन प्रवासनी एमनी कश्मकश केवी हती ?

अनु. पेईज नं. ७ से आगे

मध्य पीठपर भगवान बलरामजी - रेवतीजी, तथा लक्ष्मणजी की प्रतिष्ठा की गयी। लक्ष्मणजी के स्वरुप को हरिकृष्ण का नाम दिया गया। श्रीहरिने कहा कि बलदेवजी के रुप में मैं सदा यहाँ विराजमान रहूँगा। जोकोई भक्त यहाँ आयेगा, जैसी भी मनोकामना करेगा मैं सभी उसकी मनोकामना पूरा करुंगा। बलदेवजी की स्थापना से आनंदानंद स्वामी खूब प्रसन्न थे। इसलिये अपना जीवन यहाँ पर विताये । मूर्तियों का इतिहासपूर्व के लेख में बताया गया है। इसलिये पुनः यहाँ लिखा नहीं जा रहा है।

जेतलपुरधाम की महिमा सत्संगिजीवन, सत्संगिभूषण भक्तचिंतामणी, वचनामृत, इत्यादि शास्त्रों में वर्णित है। वर्तमान समय में बलदेवजी को रोकडिया देव के नाम से जाना जाता है। परंतु एक वात स्पष्ट है कि बलदेवजी के रुप में स्वयं भगवान स्वामिनारायण बिराजमान हैं। वे ही भक्तों को चारो पुरुषार्थ प्रदान करते हैं।

बलदेवजी तथा रेवतीजी से दो पुत्र हुए। एक निशठ दूसरे उत्मुक दोनो ही गुणवान तथा शूरवीर थे । यह जगत प्रसिद्ध है।

देव सरोवर के पश्चिम किनारे के इन्द्रपुरनगर के लोग करीब ५०० वर्ष पूर्व दिशा में आकर बस गये । इसलिये इसगाँव का नाम जेतलपुर रखा । जिसका इतिहास ''जतीलपुर की गढी नामक पुस्तक में विस्तारपूर्वक वर्णित है। देव सागर बलदेवजी के विवाह के समय चार गाँव जितना विस्तृत था।

देव सरवोर के तट पर मुगल तथा पेश्वा शासक अपने निवास की व्यवस्था भी बनाये थे । उन-उन समयों में अहमदाबाद शहर की कचहरी भी यहाँ के किला में रखी गयी थी।

हलधारी बलदेवजी की मूर्ति अद्वितीय, अलौकिक, आकृति ५०० वर्ष से भी अधिक पुरानी है। ऐसा निष्णातों का मत है । दर्शन मात्र से विचारों में परिवर्तन होने लगता है। पूर्णिमा के अवसर पर लाखों लोग पैदल चलकर या बाहन से अपनी मनोकामना पूर्ण करने के लिये आते है।

श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से

श्री स्वामिनारायण म्युजियममें

धनपूजन कार्यक्रम

श्रीजी महाराज उत्सव प्रिय थे । उत्सव का हेतु यह रहता कि सभी लोग एकत्रित हों, इससे सत्संग का अनुसंधान बना रहेगा । श्री स्वामिनारायण म्युजियम में श्रीजी महाराजने जो उत्सव किया था उसमें उपयोग आई हुई बहुत सारी वस्तुये थी, जिन्हें दर्शनार्थ रखा गया है । होली, वसंत पंचमी, दीपावली जैसे अनेकों उत्सव मनाये जाते थे । ऐसे उत्सवों को मनाने की परंपरा आज भी अपने सत्संग में दिखाई देती है ।

यहाँ के म्युजियममें गणेश चतुर्थी के दिन श्री गणपतिजीका, काली चौदश के दिन श्री हनुमानजी का पूजन प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. आचार्य महाराजश्री के वरद हाथों किया जाता है । इसके अलांवा इस वर्ष १९-११-१५ सोमवार-धनतेरस के दिन सायंकाल ६-३० बजे धन का पूजन प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू. आचार्य महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री के वरद् हाथों रखा गया है । धनपूजन का कार्यक्रम पूर्ण होने के बाद पूजन किये हुए मुद्रा को प.पू. महाराजश्री के शुभ मंगल हाथों से सत्संगी भाइयों को तथा प.पू. गादीवालाजी के वरद् हाथों से बहनो को दिया जायेगा । जिन हरिभक्तों को मुद्रा लेनी हो वे पूर्व में ही श्री स्वामिनारायण म्युजियम के कार्यालय में अपना नामांकन अवश्य करालें ।

संपर्क : प.भ. दासभाई - ९९२५०४२६८६
९८७९५४९५९७०१
०७९ २७४८९५९७

- प्रफुल खरसाणी

संप्रदाय में एकमात्र व्यवस्था स्वामिनारायण म्युजियम में महापूजा । महाभिषेक लिखवाने के लिए संपर्क कीजिए ।
म्युजियम मोबाईल : ९८७९५ ४९५९७, प.भ. परषोत्तमभाई (दासभाई) बापुनगर : ९९२५०४२६८६
www.swaminarayanmuseum.org/com • email:swaminarayanmuseum@gmail.com

श्री स्वामिनारायण म्युजियम मे भेट देनेवालों की नामावलि सितम्बर-२०१५

रु. २१,०००/- डॉ. परेशभाई दवे कृते रविभाई, अमदावाद।

रु. ९,८२५/- भूमि तेजस पटेल - बोस्टन।

रु. ७,५००/- सोनी महेन्द्रभाई - मूलचन्दभाई - अमदावाद।

रु. ६,७२५/- जीतेन्द्र नेहा पटेल - बोस्टन

रु. ६,७२५/- मधुबहन रमणभाई पटेल - बोस्टन।

रु. ६,७२५/- आर. के. पटेल - बोस्टन।

रु. ५,००१/- नटवरभाई परसोत्तमदास पटेल - राणीप।

रु. ५,०००/- तरलिकाबहन दामजी कृते - सीमा, किरण, भाविन।

रु. ५,०००/- नीतिनकुमार जयंतीलाल वालाणी, ममता नीतिनकुमार वालाणी - लंदन। कृते मुकुन्दभाई ठक्कर - अमदावाद।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में श्री नरनारायण देव की मूर्ति के अभिषेक की नामावलि (सितम्बर-२०१५)

ता. ६-९-१५ (प्रातः) धनाला (घनश्यामनगर) की सांख्ययोगी वसंतबा, सविताबा, सरोजबा, दयाबा, निताबा, मधुबा, सुनीताबा कृते राजकुंवरबा - उषाबा मोरबी।

(दोपहर) श्री स्वामिनारायण मंदिर (बहनो के) धूलकोट मूर्ति प्रतिष्ठा के निमित्त कृते सां.यो. मंजुबा, भारतीबा।

(दोपहर) श्री महिला मंडल श्री स्वामिनारायण मंदिर - विसनगर कृते सां.यो. जयाबा

ता. ८-९-१५ श्री महिला मंडल श्री स्वामिनारायण मंदिर पंचवटी कृते सां.यो. बनीताबा, हंसाबा (ऊंझा)

ता. १३-९-१५ (प्रातः) गं.स्व. ललीताबहन छगनभाई पटेल नवा वाडज कृते निरंजनभाई

(दोपहर) नितेषभाई माधवलाल खरणावाला कृते - विवेक स्वामी वर्तमान - बोस्टन

ता. १७-९-१५ (प्रातः) श्री गणपतिजी का विशेष पूजन (गणेश चतुर्थी के निमित्त) मुख्य यजमान श्री दिनेशभाई सावलिया - कर्म शक्ति कृते जयश्रीबहन, नेहांग - नवा नरोडा।

(दोपहर) दिशा प्रकाशभाई हालाई - दहीसरवाला कृते केसरा हालाई - ध.प. मानबाई (बोस्टन)

(दोपहर) माधवजी शामजी भूडिया - नारणपर कृते ध.प. अमरबहन पुत्र दिनेश माधवजी। मान्चेस्टर ध.प. कस्तूरबहन पुत्र महेश माधवजी ध.प. अंजनाबहन पौत्र रघुवीर, आदित्य तथा पौत्री प्रोशनी, रेवती।

सूचना :श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रति पूनम को प.पू. बड़े महाराजश्री प्रातः ११-३० को आरती उतारते हैं।

शुभ प्रसंग पर भेंट देने के योग्य अथवा व्यक्तिगत संग्रह के लिये - श्री नरनारायणदेव की प्रतिमा वाला २० ग्राम चांदी का सिक्का म्युजियम में प्राप्त होता है।

केवल वोडाफोनवालों के लिये

प.पू. बड़े महाराजश्री के स्ववचनवाली कोलरट्युन मोबाईळ में डाउन लोड करने के लिये अधोनिर्दिष्ट करें।

मोबाईल में टाईप करें : **cf 270930** टाईप करें **56789**

नम्बर पर : **S.M.S.** करने से कोलरट्युन प्रारंभ होगा। नोंट : **cf** टाईप करने के बाद एक स्पेस छोड़कर

सच्चादान किसे कहा जायेगा

(शास्त्री हरिप्रियदासजी, गांधीनगर)

समाज में कई बार एक ऐसा शब्द बोला जाता है जो ''दान पुण्य के नाम से जाना जाता है । कोई कहता है मैं इतना दान-पुण्य किया । लेकिन वह दान पुण्यरुप कब बनेगा ?

जब हृदय की श्रद्धा से किसी प्रकरा की आशा रखे विना नि:स्वार्थ भाव से समर्पण किया जाय उसे सच्चादान कहा जायेगा । इसके अलांवा समर्पण या नि:स्वार्थ के विना किया गया दान दान नहीं कहा जायेगा । उससे पुण्य की प्राप्ति नहीं हो सकती दान करने के पीछे, कीर्ति की, प्रशंसा की या दान करके स्वार्थ सिद्ध करना हो तो पुण्य रुप फल की प्राप्ति नहीं होगी । नि:स्वार्थ या समर्पण की भावना से दान करने वाले बिरले होते हैं ।

दान के विषय में एक उपाख्यान है - एक गाँव में एक सज्जन रहते थे, बडे सीधे सादे, परिस्थिती भी सामान्य थी । अपने परिवार की स्थिति से बाहर ही नहीं आपाते थे ।

एक दिन उन्हें एक समाचार मिला कि, नजदीक के शहर में मेला का आयोजन किया गया है । उस मेले में लाखों लोग एकत्रित होने वाले हैं । मेला में मौज-सौख के साधन, घूमने, फिरने की व्यवस्था, नास्ते पानी की व्यवस्था, अन्य अनेक वस्तुयें मेला में मिलती है । पति-पत्नी ने विचार किया कि हमलोग हाथ वनवाट की वस्तुओं का स्टोल लगाते हैं । शहरी लोग गाँव की वस्तुये अधिक खरीदते हैं । पति को यह प्रस्ताव अच्छा लगा । दोनो मेले में अपना स्टोल तैयार कर दिये । बहुत सारी वस्तुयें इस मेले में विकीं । अच्छा व्यापार हुआ और फायदा भी हुआ ।

अच्छा फायदा होनेसे दोनो ने विचार किया कि - बच्चों के लिये कुछ कपडे लेते हैं । शहर में वारंवार आना होता नहीं हैं । दोनों, बाजार से कपड़े खरीदते हैं । बच्चों के लिये, तथा पत्नी के लिये कपड़ा, साडी खरी दे । सामान लेकर घर आये, पत्नी नये कपड़े को तिजोरी में रखदी, जब कभी कोई त्यौहार आयेगा तब पहनेगे । दूसरे दिन पति-पत्नी बैठे-बैठे मेला की वात कर रहे थे । उसी समय एक ब्राह्मण आ पहुँचे । पति-पत्नीने उनका स्वागत किया । ब्राह्मण को लगा कि यह घर सम्पन्न है, सुखी है । इसलिये ब्राह्मण देवता ने कहा कि हमारे बेटी की सारी पड़ी है कन्यादान के निमित्त आप कुछ दीजिये । अभी पति कुछ विचार करें कि पत्नी तुरन्त जाकर जो नई साडी लाई थी, उसे लाकर दे दिया । ब्राह्मण से वाह-वाह की इच्छा नहीं थी । ब्राह्मण की बेटी हमारी बेटी है, भावना से उस साडी को दे दिया । सज्जन भी अपनी पत्नी की ऐसी उदात्त भावना देखकर गदगद हो गये ।

इस वात को थोडा समय ही हुआ था कि गाँव में समाचार मिला कि अपने राजा बहुत बिमार हो गये हैं । डॉ. वैद्य, हकीम - किसी की दवा लाभ नहीं कर रही है । लेकिन एक दिन महल में एक महात्मा आये उन्हों ने कहा कि राजा को कोई अपना तारुण्य प्रादन करे तो राजा बच सकते हैं, अन्यथा आयुष्य पूर्ण है ।

राज्य में इस कीसूचना दी गयी कि जो पुण्यशाळी हो, दान किया हो वह आवे, वह अपना पुण्य दे तो राजा बच सकते हैं । बड़े-बड़े शेठ, धनपति, राजा के पास आने लगे । उस महात्मा के पास चमत्कारिक पत्थर था । जो स्वार्थ से पुण्य किया हो उसका प्रतिबिम्ब उस पत्थर पर दिखाई नहीं देता था । जो पुण्य किया हो वह व्यक्ति पत्थर के पास आवे तो उसका पुण्य दिखाई देने लगता था । जो अपना पुण्य महाराजा को देने आता उसे महात्माजी अपना पत्थर देते, जिसे पुण्य दिखाई नहीं देता वह पावस चला जाता । १०-१२ लोग गये । बाद में आनेवालों की संख्या घटने लगी । लोगों को मन में स्वार्थ था कि राजा ठीक हो जायेगा तो २-४ गाँव बक्षीस में देगा, इसलिये उनका पुण्य दिखाई नहीं देता था ।

उस सज्जन ने विचार किया कि मैं पुण्य किया हूँ या नहीं, फिर भी पुण्य होगा तो राजा बच जायेगा । उनके मन में संपत्ति प्राप्त करने की लालसा नहीं थी । सज्जन राज्य मेहल की तरफ चल दिये, पत्नीने साथ में २ रोटी बांधदी । चलते-चलते जा रहे थे, रास्ते में दोपहर का समय हुआ, किसी वृक्ष के नीचे रोटी खाने जाते हैं तब तक एक कुत्ती आकर सामने खड़ी हो जाती है । एक रोटी उस कुत्ती को खिला देते हैं । दूसरी रोटी में से दोग्रास ही खायें होगे कि पुनः कुत्ती सामने आकर खड़ी हो गयी । जो अवशिष्ट रोटी थी उसे भी कुत्ती को डाल दिये । सायंकाल राज्य महल में पहुंचे । वहाँ के लोगो से कहे कि मैं राजा को अपना पुण्य दान करने आया हूँ । उन्हें महात्मा के पास लाया गया महात्माने पत्थर में उनके दो पुण्य देखे । प्रथम-पत्नी ने ब्राह्मण को पुत्री के विवाहार्थ साडी का दान, दूसरा सज्जन ने अपने भाग की रोटी कुत्ती को खिलाया । इन देनो पुण्य का संकल्प महात्माने राजा के स्वास्थ होने के लिये ज्यों किया त्यों राजा ठीक होगये । सज्जन भी प्रसन्न हो गये कि हमारा पुण्य राजा के काम आया । सज्जन को कोई स्वार्थ नहीं था । वे घर जाने के लिये निकल ही रहे थे कि सन्देश आया कि राजा सभा में सज्जन को बुला रहे हैं । राजा ने उन

सत्संग बालवाटिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

सज्जन को सभा में दो गाँव बक्षीस देने की घोषणा कर दी।

बालमित्रो ! भगवान स्वामिनारायण को सर्वस्व अर्पण करने वाले दादा खाचर जैसे भक्त विना किसी अपेक्षा के दान करे देते हैं ।

उन्हे यश-कीर्ति के लिये नहीं अपितु भगवान स्वामिनारायण की प्रसन्नता के लिये करते थे । ऐसे भक्तों नाम दिवाल पर नहीं, भगवान के तथा लाखों भक्तों के दिल में आये इस तरह अमर है। इस तरह स्वार्थ या अपेक्षा के विना दान देने वाला निष्काम भक्त कहा जाता है। ऐसे निष्काम भक्त भगवान को प्रिय है।

स्वार्थ के विना दिये गये दान से ही भगवान प्रसन्न होते हैं। इस तरह के सच्चे दान भगवान की दृष्टि में रहते हैं । इसके अलांवा अपनी प्रशंसा करने के लिये या मान की लालसा से किया गया दान पुण्यदायी नहीं होता।

•

सफलता किसे मिलती है

– नारायण वी. जानी (गांधीनगर)

भाग्य में जो लिखा होगा वह मिलेगा, प्रारब्धमें जो होगा वह मिलेगा ऐसा सभी कहते रहते हैं । शास्त्रो में भी भाग्य तथा प्रारब्धकी वात आती है। भगवान स्वामिनारायणने भी वचनामृत में प्रारब्धकी वात की है। जो प्रारब्धमें होगा उसे विना भोगे पूर्णता नहीं होती । मनुष्य की भाग्य कब बदल जायेगी किसी को पता नहीं हैं। लेकिन महात्मा लोग इसे जानते हैं। ऐसा भी उदाहरण है कि बड़े संतो के आशीर्वाद से रंक भी राजा हो गया। ऐसे संतो को पीडा देने वाला राजा से रंक भी हो गये है। इस वात का ध्यान रखना चाहिये कि संत द्रोह न हो और संतो की आज्ञा में विश्वास रख कर जीवन का कार्य करना, उसमें फेरफार नहीं करना चाहिए । ऐसा करने वाला सुखी हो जाता है।

इसके लिये एख दृष्टांत है – सुंदरजी नामका एक सौदागर था। बाल्यकाल से ही उसे जुआरी कहा जाता था । मा-बाप की वात नहीं मानता था । रात भर इधर-उधर घूमता रहता था । गलत आदत पड़ गयी थी। रात में कभी आये तो विलम्ब से आवे, गधे पर बैठकर। बहुत लोग समझाये कि गधे की सवारी अच्छी नहीं है, लेकिन वह कहता कि घोडे और गधे में कोई फर्क नहीं है।

उसके पिता को हुआ कि इसका विवाह कर दें तो सायद बदल जाय । लेकिन इससे कोई फायदा नहीं हुआ । बाद में पिता सुन्दरजी थक कर उसे भाग देकर अलग कर दिये। भाग मिलने से अब वह और स्वतंत्र हो गया । अब और अधिक जूआ खेलने लगा, कहीं हारता तो कही जीतता। कभी हार जाता तो अधिक दाव लगाकर खेलता, इस तरह करने से वह पायमाल हो गया। उसे विचार आया कि गिरनार की तरफ जाकर घूंम आऊँ। वहाँ पर किसी महात्मा से भेंट हो जाय, वे मंत्र बतादें, उससे बहुत पैसे आयेंगे और अधिक जूआ खेलेंगे।

गिरनार में घूमते हुये एक महात्मा से मुलाकात हो गई मंत्र की इच्छा से सुन्दरजी वहीं रहकर सेवा चाकरी करने लगा। लेकिन वह महात्माजी बड़े पक्के थे। वे मंत्र तो दिये लेकिन पैसे नहीं दिये। वे पुरुषार्थ का मंत्र दिये और कहे कि – तुम कच्छ जाओ वहीं पर तुम्हारी भाग्य खुलेगी लेकिन धर्मभाव से रहना । तभी तुम्हारा काम होगा।

सुन्दरजी को गुरु में विश्वास था। वह कच्छ की तरह चल दिया । कच्छ के माण्डवी में एक शेठ से मिला। शेठ का एक घोडा था वह विगडा हुआ था, उसे बड़े अच्छे जानकार भी शांत नहीं कर पा रहे थे। लेकिन सुन्दरजी ने उस घोडो को शांत करने की हिंमत की . दौडकर छलांग मारकर बड़ी तेज गति से घोडे के ऊपर जाकर बैठ गया। अब वह घोडे को इतना दोडाया कि धोडा थक कर नरम पड गया। वह शेठ सुंदरजी के ऊपर खुश हो गया। शेठजी उसे घोडा परखने वाला समझकर घोडे के व्यापारी के रुप में पैसे को रोका।

सुन्दरजी का सितारा चमका। गाँव-गाँव घूमकर अच्छे घोड़े एकत्रित करने लगा। घोडे की ट्रेनिंग देता। इसके बाद उस घोडें को अच्छे पैसे मिलने पर बेंच देता। इसके बाद उस घोड़े को अच्छे पैसे मिलने पर बेंच देता। लेकिन महात्मा के वचन को याद रखता कि "धर्म पूर्वक काम करना" गुरु के वचनानुसार जीवनजीने लगा और पुरुषार्थ करने लगा। सुन्दरजी खूब सुखी हो गया। लडाई के समय अंग्रेज सरकार भी इस सुन्दरजी के पास से अच्छे-अच्छे घोड़ो के खूब कींमत देकर खरीदते थे।

उस समय भयंकर दुष्काल पड़ गया । लोगों को खाने के लिये तकलीफ पड़ने लगी । भूख के कारण हजारो लोग मरने लगे । ऐसी विपरीत परिस्थिति में सुन्दरजी अपनी सम्पत्ती का सेवा में उपयोग किये। उनके दरवाजे से कोई वापस नहीं जाता था । उन्हें लोग शाह सोदागर के नाम से जानने लगे।

मित्रो ! इसमें आप सभी को क्या सीखने को मिला ? चाहे जैसा भी रहा हो सुन्दरजी, लेकिन महात्मा के वचन में विश्वास रखा तो उसका जीवन सुखमय हो गया। इसी तरह हमें भी जीवन सुखी होना हो तो धर्म के मार्ग पर चलेंगे, सत्शास्त्र तथा गुरु-महात्मा के वचन में विश्वास रखेंगे तो निश्चित जीवन में सुख की प्राप्ति होगी। भगवान स्वामिनारायण ने कहा है कि "पुरुषार्थ हीन व्यक्ति के ऊपर भगवान की कृपा नहीं होती" इसलिये – प्रारब्ध+ पुरुषार्थ + कृपा = सफलता।

भक्तिसुधा

(प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी के आशीर्वचन में से)
"अनुराग मात्र परमात्मा में रखना चाहिए" (एकादशी सत्संग सभा प्रसंग पर - कालुपुर मंदिर हवेली)
(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

परमात्मा की उपासनारुपी अनुराग को छोड़कर पंच विषय भोगने की इच्छा को कामना कहते हैं। काम, क्रोध, लोभ, मोह, ये सभी नरक में जाने के मार्ग हैं . अनंत जन्मो से कामनाओं की तृप्ति होती ही नहीं है। जिस तरह अग्नि में घी का हवन करें तो अग्नि बढती है। लेकिन अग्नि को शांत करने के लिये पानी की जरुरत पडती है। इसी तरह परमात्मा की कामना जल की तरह है, क्योंकि परमात्मा को प्राप्त करने के बाद दूसरी कोई कामना नहीं रहती। संसार की कामना के समान है। जैसे-जैसे संसार सुख-वैभव का आप उपभोग करते हैं वैसे-वैसे कामना बढती जाती है। कामना मनमें उत्पन्न होती है। पंच विषय का संबन्धमन के साथ है। जो अनुभव होता है वह मन में होता है। पूर्व के संस्कारानुसार मनकी ग्रन्थी खुल जाती है अर्थात् कामना उत्पन्न होने लगती है। इन्द्रियां तो मात्र साधन हैं। आंख से देखने मात्र से दिखाई नहीं पड़ता। कान से सुनाई नहीं पडता, इसके लिये मन के एकाग्रता की आवश्यकता होती है। बुद्धि निर्णय करती है। यदि हम सत्संग में बैठे हों और नींद आगयी हो तो कथा में क्या आया आपको ख्याल नहीं रहता। आपका कान तो खुला ही है, फिर भी याद नहीं रहता। इसका कारण क्यां है?

बुद्धि मन से सुषुप्त अवस्था में रहती है। सबसे बड़ी बात तो यह है कि बहुत सारे लोग बैठे होते हैं फिर भी सभी कामना अलग-अलग होती है। इसका मूलकरण है आशक्ति ! जब काम पूर्ण हो जाय तो लोभ में वृत्ति हो जाती हैं। यदि पूर्ण न हो तो दु:ख होता है। बाद क्रोधउत्पन्न होता है। यह सुख-दु:ख की अनुभूति किसको होती है? अहंकार को होती है। लोभ भी ईच्छा नहीं और क्रोधभी अच्छा नहीं। तो क्या करना चाहिए ? आसक्ति को ही समाप्त कर देना चाहिए। आसक्ति रखना है तो परमात्मा में रखनी चाहिए। हम इस संसार में कितने जन्मों से दु:ख, तिरस्कार, अपमान, इत्यादिका सहन कर रहे हैं फिर भी थकते नहीं। लेकिन परमात्मा के लिये १ घन्टे चलना पड़ता है तो थक जाते हैं। दो दिन सो भी जाते हैं। संसार की कामना को पूर्ण करने में थके नहीं, इसका क्या कारण ? इसका कारण यह कि - हम संसार का २३ घन्टे चिंतन किये तथा परमात्मा का १ घन्टा चिन्तन किये। इसी से कामना कम नहीं होती। संसार में रहकर कर्म करना हो तो अन्या सक्त रह कर करें। मन के अन्दर परमात्मा का चिन्तन रखना इससे धीरे-धीरे आसक्ति कम होने लगेगी। कोई हमें दु:ख दे, अपमान करे तो वैराग्य जैसे हो जाता है। मन में होने लगता है कि शास्त्रों में जो लिखा है वह सत्य है, संत भी सत्य कहते हैं। लेकिन थोड़ी देर बाद वही अपमान करने वाला सामने से आकर माफी मांगले तो हम अपमान को भूल जाते हैं और फिर से आसक्त हो जाते हैं। जिसतरह वृक्ष का मूल अधिक अन्दर हो तो आंधी में भी वह गिरता नहीं। लेकिन भयंकर तूफान आजाय तो उसे धराशायी कर देता है। इसी तरह हमारे जीवन में थोड़ी बहुत समस्याये आती है और विचलित कर देती हैं, लेकिन उससे कामना-आसक्ति मोह इत्यादि स्थाई रुप से निकलता नहीं है। खराब अनुभव हो, खराब कोई प्रसंग बन गया हो तो कामना रुपी वृक्ष धराशाई हो जाता है। लेकिन किसी के जीवन में बड़ी भाग्य से ही होता है। रोगी के रोग को मिटाने के लिये रोग को स्वीकार करना पडेगा। जब तक रोग को स्वीकार नहीं करेंगे तब तक रोग मिटेगा नहीं । रोग को स्वीकार करके डॉक्टर के पास जायेंगे, डॉक्टर दवा देगा, परहेज करना पडेगा, बाद में ही रोग ठीक होता है। शरीर स्वस्थ होती है।

इसी तरह आत्मा को स्वरस्थ रखना हो तो सत्संग रुपी डॉ. की जरुरत पड़ेगी। उसमें भी परहेज करने की वात आती है। किस वस्तु से दूर रहना, जीवन में क्या करना - भजन - भक्ति, कथावार्ता, तप-नियम रुपी दवा तो लेना ही पड़ेगा। परमात्मा दिव्य हैं, मन मायिक है। दोनो विरोधी एक साथ रह नहीं सकते "प्रकाश" तथा "अन्धकार" साथ नहीं रह सकता।

प्रकाशरुपी दीपक प्रकट करते ही अन्धकार अपने आप चला

जाता है। इसलिये हमें भी आत्मा परमात्मारुपी दीपक को प्रगट करना चाहिए। संसार के प्रति वैराग्य रखना चाहिए। भगवान के प्रति अनुराग रखना चाहिए। हम अनुराग कहाँ रखते हैं वह समझने की वात है। खूब मेहनत करने की जरुरत नहीं है। लेकिन सत्संग में आना हो तो इमानदारी से आना है। संसार से अनासक्त होकर आइये। रात दिन संसार के काम में लगे रहते हैं थोड़ा समय भगवान के लिये निकालना चाहिए और सोचना चाहिए कि हमारे जीवन में क्यां नहीं है, अपने जीवन में नहीं करने लायक क्या है। इसके बाद ही भगवान में अनुराग बढेगा। प्रीति होगी। आप सभी को भगवान अपने में आसक्त रहने की आत्म बुद्धि दें ऐसी श्री नरनारायणदेव के चरणों में प्रार्थना।

•

पढने लाकय ब्रहाविद्या

– सां.यो. कोकिलाबा (सुरेन्द्रनगर)

जगत में जो बुद्धि है वह भौतिक बुद्धि है। यह बुद्धि आत्मा का कभी हित नहीं करती। किसी को सच्चा सुख नहीं दे सकती। भौतिक बुद्धि से जीव का कभी कल्याण नहीं होता। मोक्षमार्ग पर चला भी नहीं जा सकता। सच्ची विद्या तो मोक्ष का विचार है। विद्या चाहे जितनी पढी हो लेकिन वह मोक्ष के काम में आनी चाहिए। भगवान स्वामिनारायण का यह दृढ आग्रह था। लौकिक विद्या तो सभी जगह पढी जाती है – लेकिन पढने लायक तो ब्रह्म विद्या – मोक्ष विद्या है। श्रीजी महाराज शिक्षापत्री के १४ वें श्लोक में कहते हैं कि विद्यादिक वाला जो भी पुरुष हो उसके गुण का यही फल है। कि वह भगवान कृष्ण की भक्ति करता हो, सत्संग करता हो यदि एसा नहीं है तो चाहे कितना बड़ा विद्वान हो तो भी वह अधोगति को प्राप्त करता है।

चाहे जितना पढकर, जितनी बड़ी डिग्री लेलिया हो लेकिन एक विद्या न हो तो सभी विद्या नकामी है। जीवन में संस्कारों का सद्‌गुण आवे यह सबसे बड़ी विद्या है। श्रीजी महाराज वारंवार कहते साधु पढा न हो लेकिन आचरण शुद्ध रहना चाहिए। उसका वर्तन ही समाज में कहेगा। सद्‌गुण की सफलता किसमें हैं ? जगत के व्यवहार में, जगत की कला में तो बहुत अच्छा, लेकिन भगवान की भजन करता है या नहीं ? यदि भगवान की भक्ति करता होगा तो उशकी सभी कला सफल कही जायेगी।

चाहे कितना भी ज्ञानी हो, उससे क्या प्रयोजन ? धोलका में पू. गोपालानंद स्वामी गये थे। कोई महापंडित ब्रह्मराक्षस हो गये थे। चौदह विद्या – ४ वेद उन्हें कंठ थे। फिर भी उसका मोक्ष नहीं हो रहा था। कारण यह कि – भक्ति तथा सत्संग नहीं था। इसलिये जो विद्या मोक्ष दे वही पढना चाहिये।

एक नाव में बहुत सारे विद्वान बैठे थे। उसमें एक ज्योतिष के भी विद्यान थे। दूसरे गायक भी बैठे थे। तीसरे बैद्य, ४ वेदान्ती इस तरह सभी आपस में चर्चा प्रारंभ कर दिये।

सावन का महीना था। नदी खूब तेज गति से बह रही थी। एक दूसरे में वात भी रहो रही थी। प्रथम ज्यौतिषी से प्रश्न पूछा गया। आप कौन हैं ? मैं ज्योतिष विद्या में त्रिकालदर्शी हूँ। गायनाचार्य ने कहा कि केवल गायन विद्याही श्रेष्ठ बाकी नहीं। वैद्य जी कहने

लगे वैद्य शास्त्र सबसे अधिक उपयोगी है शरीर को स्वस्थ रहने की सारी क्रिया इसमें, स्वास्थ्य है तो सबकुछ है। वेदान्तीने कहा कि जो अहंब्रह्मास्मि, तत्वमसि को नहीं जाना उसने कुछी भी नहीं जाना। इस तरह की चर्चा के वीच नाव भी बीच मझधार में पहुँच गयी।

संयोग ऐसा बना कि बीच मझधार में तरंगो के बीच नांव फंस गयी - डूब जायेगी ऐसा लगने लगा। सबसे पहले ज्योतिषी चिल्लाया, तुम नाव को बचाओ। सम्हालो नाव को। नाविक ने कहा कि आप तो तीनोकाल को जानने वाले हैं तो शुभमुहूर्त देखकर नहीं निकले थे। दूसरे गायक महोदय, चिल्लाये, उनसे भी कहा कि आपके गायन से दीपक बुझजाता है और दीपक जलजाता है तो बाढके बेग को भी आप रोक दीजिये। तीसरे वैद्यजी भी चिल्लाने लगे तो नाविकने कहा कि आप तो सभी की काया कल्प करते हैं, आज आपके काया कल्प का अवसर आ गया है। चौथे वेदान्ती ने कहा कि नावको किनारे लगा दे नहीं नाव डूब जायेगी। हंसते हुये नाविकने वेदान्ती से कहा कि ब्रह्म की वात कर रहे थे तो ब्रह्म या जीव तो कभी न डूबता है न तो कभी मरता है। फिर आप क्यों चिन्ता करते हैं। उसे कहा कि अब नाव बचेगी नहीं डूबने की स्थिति में है। आप सभी को तैरने आता है, तैरना भी एक विद्या है। सभी एख दूसरे का मुख देखने लगे। कहने लगे कि हम केवल तैरने की विद्या ही नहीं सीखे। नाविकने कहा कि अब आप सभी को कोई नहीं बचासकता। इतने में एक झोका ऐसा आया कि नाव उलट गयी, नाविक कूद कर तैरते हुये बाहर निकल आया बाकी उसी में डूब गये।

कहने का हार्द यह है कि हम चाहे जितना पढे हों लेकिन जीवनरुपी संसार सागर से पार होने के काम में तो मात्र ब्रह्मविद्या, मोक्षविद्या, अमृत विद्या ही काम में आती है। बाकी तो डुबाने वाली विद्या है।

•

स्वामिनारायण महामंत्र

- पटेल लाभुबहन मनुभाई (कुंडाल, ता. कडी)

स्वामिनारायण आज प्रगट महामंत्र है,
श्रावणे सांभड़ता कंये दिनकर दूत जो।
भवना बंधन सद्यकापी सुखिया करे,
शुं कदी दाटवुं महिमा अति अद्‌भुत जो ... स्वामिनारायण
अनंत पतित उधार्या पूरेव आ मंत्र थकी,
अजामिल गणिका आदिक अपार तो,
ते मंत्र आज महाराजे प्रगट कर्यो,
कलिमा करवा अनेक पतित भव पारजो ... स्वामिनारायण
सकामीजन सुमरी पाये त्रिवर्गने,
निष्कामीजन पामे पदनिर्वाण जो,
नाम तणा नामी स्वामी प्रगट मळ्या,
ते जनना शुं करुं मुखे वरपाण जो ... स्वामिनारायण
भव ब्रह्मा मुनि मुक्त जपे आ मंत्रने,
से सहु पाम्या मनवांछित सुख साजजो,
प्रेमानंद कहे करजोडी सहुजनने,
भूलशो मा अवसर आव्यो आजजो ... स्वामिनारायण

उपरोक्त पद्य के माध्यम से प्रेमानंद स्वामी हम सभी को उपदेश दे रहे हैं कि आज कलियुग में यह महामंत्र है। जिसके श्रवण करने मात्र से यमदूत भी कांप उठते हैं।

इस मंत्र के उच्चारण करने मात्र से अजामिल आदिक महापापी भी मुक्त हो गया था।

स्वामिनारायण महामंत्र के स्मरण मात्र से निष्कामी भक्त को अक्षर के सुख को प्राप्त करता है। इस मंत्र के उच्चारण करने से देवता भी अपनी मनोकामना पूर्ण करते हैं। इस तरह से यह नाम की महिमा है। इस समय को व्यर्थ नहीं जाने देना चाहिए। इसलिये प्रेमानंद स्वामी विनम्रभाव से भक्तों से कहते हैं कि यह अवसर मिला है इसे जाने नहीं देना है।

स्वामिनारायण, स्वामिनारायण, स्वामिनारायण इस नाम मंत्र की सदा रटन करते रहना चाहिए।

वैराग्यमूर्ति निष्कुलानंद स्वामी की मंत्र की महिमा का गुन गान करते हुए लिखते हैं -

स्वामिनारायण, व्हालु लगे स्वामिनारायण. १
रात दिवस मारा दरुदिया भीतर, जपीश आठुं जाम व्हालु. २
भवजल तरवा पार उतरवा, ठरवानुं छे मारे ढाम, व्हालु. ३
सर्वोपरि श्याम छे नरवीर नाम छे, सुंदर सुखडानुं धाम, व्हालु. ४
निष्कुलानंदना नाथने भजता, वारे तेनुं नहीं काम, व्हालु. ५

इस पद में वैराग्यमुर्ति निष्कुळानंद स्वामी कहते है कि हमें स्वामिनारायण महामंत्र अतिशय प्रिय है। मेरे हृदय में निरन्तर यह नाम चलता रहता है।

यह स्वामिनारायण महामंत्र इतना बलशाली है कि सुनने मात्र से परमधाम की प्राप्ति होती है। इस महामंत्र के श्रवण मात्र से पाप नष्ट होजाता है। नाम का स्मरण करते रहने से परम सुख की प्राप्ति होती है। ऐसा यह महा प्रतापी नाम है। यही महामंत्र है।

सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में जलझीलणी एकादशी को श्री गणपतिजी की शोभायात्रा का आयोजन

सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवानने उत्सवों को मानने की जो आज्ञा की है उसका हम सदैव पालन करते आये है।

भाद्र शुक्लपक्ष की जलझीलणी एकादशी को विघ्नहर्ता श्री गणपति देव की शोभायात्रा श्रीहरि के समय से ही प्रचलित है। अपने आदि आचार्य प.पू. श्री अयोध्याप्रसादजी महाराज शोभायात्रा में भाग लेने वाले उत्सवी मंडल के साथ मिलकर त्वरित कीर्तन की रचना करके स्वयं ही उसका गान करते थे। (उन्होने ही महाराज के कई पदों की रचना की है।) ता. २४-९-१५ गुरुवार को दोपहर १-३० बजे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री अपने पार्षद गणों के साथ पधारे। मंदिर में आरती करके श्री नरनारायणदेव उत्सवी मंडल के साथ संतो-हरिभक्तों की विशाल मेदनी को दर्शन दिये। मंदिर के प्रांगण में उत्सवी की धून के साथ ठाकुरजी के दर्शन तथा धर्मवंशी के दर्शन की शोभा का अद्‌भुत वर्णन करना कठिन है।

कालुपुर मंदिर से शोभायात्रा धूमधाम से निकलकर नारणघाट मंदिर पहुंची। पवित्र तीर्थ समान साबरमती नदी में भावि आचार्य प.पू. लालजी महाराजश्रीने ठाकुरजी को स्नान करवाया। ठाकुरजी की आरती की। साम को जब शोभायात्रा वापस लौटी तब धूमधाम से उत्सवी किया गया। प.पू. लालजी महाराज के साथ अहमदाबाद मंदिर के पू. महंत शा. स्वामी हरिकृष्णदासजी, स.गु. स्वा. जगतप्रकाशदासजी, स.गु. स्वामी सूर्यप्रकाशदासजी, स.गु. शास्त्री आनंदजीवनदासजी, कोठारी जे.के. स्वामी, श्री नरनारायणदेव के पूजारी ब्रह्मचारी स्वामी राजेश्वरानंदजी, भंडारी जे.पी. स्वामी, स.गु. स्वामी हरिचरणधासजी, योगी स्वामी, शा. स्वा. नारायणमुनिदासजी, शा. छपैयाप्रसाददासजी आदि संतो पार्षदो ने शोभायात्रा में भाग लिया। कालुपुर मंदिर में पू. महंत स्वामी के मार्गदर्शन से उनके शिष्य मंडल कोठारी जे.के. स्वामी, को. शा. मुनि स्वामी, भंडारी जे.पी. स्वामी तथा ब्रह्मचारी स्वा. राजेश्वरानंदजी आदि संत मंडलने सुंदर व्यवस्था की थी। नारणघाट मंदिर में भी महंत स.गु. स्वा. देवप्रकाशदासजी के मार्गदर्शन से को. बालु स्वामी, शा. दिव्यप्रकाश स्वामी, भानु स्वामी आदि संत मंडलने तथा श्री नरनारायणदेव युवक मंडलने सुंदर व्यवस्था की।

(को. शा. नारायणमुनिदास)

अहमदाबाद मंदिर में जन्माष्टमी को कीर्तन भक्ति का आयोजन

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा पू. महंत स्वामी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी रात्रि में १० से १२ बजे तक पूरव पटेल आदिने कीर्तन भक्ति का गान किया। रास-गरबा भी धूमधाम से किया गया। रात्रि में १२-०० बजे जन्मोत्सव विधिपूर्वक मनाया गया। कोठारी जे.के. स्वामी तथा संत मंडलने सुंदर व्यवस्था का आयोजन किया। (उर्मिक पटेल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर नारणघाट जन्माष्टमी उत्सव मनाया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा स.गु. महंत स्वामी देवप्रकाशदासजी के मार्गदर्शन से श्री स्वामिनारायण मंदिर नारणघाट में सावन कृष्ण पक्ष-८ श्री कृष्ण जन्माष्टी को मंदिर में ठाकुरजी के सिंहासन का भव्य रोशनी से शिंगार किया गया। मयंकभाई मोदी तथा साथी कलाकारोने कीर्तन-धून की। रात्रि में १२ बजे जन्मोत्सव की आरती में यजमान प.भ. अमृतभाई पटेल (ईटादरावाले) आदि परिवारने लाभ लिया। समग्र आयोजन कोठारी स्वामी बालस्वरुपदासजी की प्रेरणा से नरनारायणदेव युवक मंडलने प्रेरणात्मक सेवा की। समग्र प्रसंग में सभा संचालन शा. दिव्यप्रकाशदासजीने किया।

साथ ही आगामी ता. २४-२-१६ से २८-२-१६ तक "श्री घनश्याम महोत्सव" को मनाने की घोषणा की गयी। (श्री स्वा. सत्संग समाज नारायणघाट, रोहित तारपरा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरिया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से कांकरिया मंदिर के महंत स.गु. शा.स्वा. गुरुप्रसाददासजी तथा स.गु.शा. स्वा. आनंदप्रसाददासजी की प्रेरणा से कांकरिया में नीचे दिये गये अनुसार उत्सवों को धूमधाम से मनाया गया।

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी

सावन कृष्ण पक्ष-८ को श्री कृष्ण जन्माष्टमी का पर्व रात्रि १२-०० बजे आरती करके धूमधाम से मनाया गया। प्रत्येक हरिभक्त को पंजीरी का प्रसाद दिया गया।

हिमालय अमरनाथ दर्शन

सावन कृष्ण पक्ष-८ ता. ५-९-१५ के शुभ दिवस पर

कांकरिया मंदिर में बिराजमान सिध्धेश्वर महादेव में रंगबीरंगी बरफ में हिमालय के अमरनाथ भगवान के दर्शन हेतु हजारो हरिभक्तों की भीड आयी थी।

महारुद्र यज्ञ

बाल स्वरुप कष्टभंजनदेव तथा सिध्धेश्वर महादेव के सानिध्य में सावन कृष्ण पक्ष अमावस्या को ता. १३-९-१५ के रविवार को महारुद्र यज्ञ का सुंदर आयोजन किया गया। सुबह से साम तक यजमानोने यज्ञ में बैठकर यज्ञ का लाभ लिया।

इस प्रसंग पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से साम ६ बजे क्षीफळ की आहुति के साथ आरती करके यज्ञ की पूर्णाहुति की । कालुपुर तथा बापुनगर से संतगण पधारे थे । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने सभा को आशीर्वाद दिये।

अमावस्या के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वदर् हाथों से सिध्धेश्वर महादेव का अभिषेक पूजा आरती करके सभी भक्तों को अलौकिक दर्शन का लाभ दिया । अंत में प.पू. महाराजश्रीने सिध्धेश्वर महादेव - बाल स्वरुप कष्टभंजन देव तथा श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज की संध्या आरती की।

सावन महीने में कथा पारायण का आयोजन

कांकरिया मंदिर में समस्त सावन महिने में सभा मंडप में को. शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी (एप्रोच मंदिर) ने साम को सभी भक्तों को कथामृत का पान करवाया । कई संतगणने पधारकर अपनी अमृतवाणी का लाभ दिया। वयोवृद्ध पू. माधव स्वामीने भी समस्त सावन महीने में कथा श्रवण किया । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आशीर्वाद से मंदिर में प्रत्येक उत्सवों को धूमधाम से नाया जाता है। (डॉ. हिरेन श्री न.ना.देव युवक मंडल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर वड़नगर में सत्संगिजीवन पारायण

ऐतिहासिक तथा धार्मिक नगरी वड़नगर के श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से प.भ. मोदी मणीलाल जगजीवनदास भगत के परिवार के प.भ. मोदी रविनभाई मणीलाल के चि. समितकुमार के संकल्प से श्रीमद् सत्संगिजीवन पंचान्ह पारायण का आयोजन ता. १९-९-१५ से ता. २३-८-१५ तक किया गया। कथा का पान स.गु.शा. नारायणवल्लभदासजी तथा स.गु. कोठारी शा.स्वा. विश्वप्रकाशदासजीने करवाया।

इस प्रसंग पर ता. २३-८-१५ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री संत मंडल के साथ पधारे थे । यजमान परिवारने धूमधाम से उनका स्वागत किया। प.पू. आचार्य महाराजश्रीने ग्रंथ तथा व्यासपीठ का पूजन करके आरती की। यजमान परिवार के मोदी मणीलालभाई, मोदी वासुदेवभाई, मोदी रविनभाई, मोदी जयंतीभाई, तथा चि. दिक्षितकुमार तथा चि. सचिनकुमार मोदी, चि. सुनिलने प.पू. आचार्य महाराजश्री का स्वागत पूजन करके आरती उतारकर आशीर्वाद प्राप्त किये।

(प्रेषक शा. नारायणवल्लभदासजी वड़नगर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर पेथापुर

सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा से पेथापुर मंदिर में आश्विन कृष्णपक्ष-२ से सावन कृष्णपक्ष-२ तक ठाकुरजी समक्ष भव्य झूलेको फूल, पंचमेवा, फल, शब्जीयोंका भिन्न-भिन्न सुंदर कलात्मक बनाकर श्रीहरि बालमुकुन्द को झुलाकर हरिभक्तों ने आनंद मनाया। समग्र आयोजन यहाँ के महंत स्वामी धर्मप्रवर्तकदासजीने किया।

गुरु पूर्णिमा के सुभ दिवस पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से साधु घनश्यामजीवनदासजी गुरु स.गु. शा.स्वा. धर्मप्रवर्तकदासजी (पेथापुर) को संत की महादिक्षा दी गयी। (धर्मप्रवर्तक स्वामी - महंतश्री पेथापुर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर एप्रोच बापुनगर समूह महापूजा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा एप्रोच मंदिर के महंत स.गु. स्वा. लक्ष्मणजीवनदासजी की प्रेरणा से पवित्र पुरुषोत्तम महिने में ता. १५-८-१५ को मंदिर में समूह महापूजा का आयोजन किया गया। जिस के मुख्य यजमान प.भ. रमेशभाई काथरोटीया के साथ १५० यजमानोने लाभ लिया था । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने इस प्रसंग पर पधारकर महापूजा की पूर्णाहुति करके सभा में पधारे थे। नये मुमुक्षुंओ को कंठी पहनाकर गुरुमंत्र प्रदान किया । इस प्रसंग पर कालुपुर, नारणपुरा तथा कांकरिया से संतगणने पधारकर महापूजा का माहात्म्य समझाया था।

प.पू. महाराजश्रीने श्री घनश्याम महाराज की आरती करके नयी ओफिस का उद्घाटन किया । झूलोत्सव भी धूमधाम से मनाया गया। प.पू. महाराजश्रीने सभी को आशीर्वाद दिये।

(गोरधनभाई सीतापरा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर बालासिनोर श्रीमद् सत्संगिभूषण सप्ताह पारायण

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से, प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से बालासिनोर के तमाम हरिभक्तों के साथ सहकार से वारा वाले संत नारायणमुनिदासजी द्वारा सुदंर पारायण का आयोजन किया गया।

सावन कृष्ण पक्ष-१० से सावन कृष्ण पक्ष अमावस्या तक स.गु. शा.स्वा. छपैयाप्रसाददासजी के वक्तापद पर श्रीमद् सत्संगिभूषण सप्ताह पारायण का पान हजारों हरिभक्तोंने किया।

पारायण की पूर्णाहुति के प्रसंग पर कालुपुर मंदिर के कोठारी जे.के. स्वामी, भंडारी जे.पी. स्वामी, तथा शा. स्वा. विश्वविहारीदासजी तथा पार्षद हार्दिक भगत आदि पधारे थे। कथा

पूर्णाहुति की आरती संतो तथा यजमान परिवारने की।

शा.स्वा. विश्वविहारीदासजीने प्रेरणात्मक श्रीहरि का माहात्म्य कहा पार्षद रमेश भगत का संतोने सन्मान किया। सभा संचालन हार्दिक भगतने किया। समग्र प्रसंग में हरिभक्तों तथा ट्रस्टीओने सुंदर सहयोग किया। कथा में श्री घनश्याम जन्मोत्सव तथा गादी अभिषेक, श्री नरनारायणदेव की प्रतिष्ठा आदि महोत्सव धूमधाम से मनाये गये।

(बालासिनोर सत्संग समाज - हार्दिक भगत)

श्री स्वामिनारायण मंदिर माधवगढ (प्रांतिज) श्रीमद् भागवत सप्ताह रात्रीय पारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से, गाँव के सभी हरिभक्तों के सहयोग से श्री स्वामिनारायण मंदिर में सावन शुक्ल पक्ष-२ से सावन शुक्ल पक्ष-८ तक श्रीमद् भागवत् रात्रीय सप्ताह पारायण कालुपुर मंदिर के विद्वान शा. छपैयादासजी (वे.आ.). के वक्तापद पर सम्पन्न हुई। इस प्रसंग पर तलोद के सोनी भक्तों की तरफ से सोना चांदी के भव्य झुलोत्सव बनाकर श्रीहरि को झुलाया गया । कथा की पूरणाहुति प्रसंग पर अहमदाबाद से पू. कोठारी स्वामी, योगी स्वामी, स्वामी सूर्यप्रकाशदासजी आदि संतगण पधारे थे। सभा संचालन पा. हार्दिक भगतने किया था । यजमान हरिभक्तों की तरफ से प्रसाद का सुंदर आयोजन किया गया ।(कोठारी पटेल सुरेशभाई माधवगढ)

श्री स्वामिनारायण मंदिर श्रीनगर कलोल

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की शुभ आज्ञा से तथा श्री स्वामिनारायण मंदिर श्रीनगर कलोल में ता. १५-८-१५ को स्वतंत्रता दिवस पर भगवान समक्ष राष्ट्रध्वज के झुलोत्सव का दर्शन करके उत्सव मनाया गया।

इस प्रसंग पर श्री स्वामिनारायण विश्वमंडल गुरुकुल के स्वामीश्री प्रेमस्वरुपदासजीने पधारकर हरिभक्तों को सर्वोपरि भगवान का तथा धर्मकुल की महिमा गान किया । ट्रस्टी श्री लक्ष्मणभाई जे. पटेल का भी सन्मान किया गया।

(कनैयालाल वी.)

श्री स्वामिनारायण मंदिर ईलोल

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर ईलोल में ता. ५-९-१५ जन्माष्टमी के प्रसंग पर सुंदर सभा का आयोजन किया गया । जिस में हिंमतनगर, मंदिर के महंत शा.स्वा. प्रेमप्रकाशदासजी आदि संत मंडलने श्रीकृष्ण भगवान के प्राकट्योत्सव की लीला कथा के साथ सर्वोपरि श्रीहरिका महिमा गान किया।

(किरीटभाई ए. पटेल - ईलोल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर हिंमतनगर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की शुभ आज्ञा से मंदिर के महंत शा.स्वा. प्रेमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से पवित्र सावन महीने में श्रीमद् भागवत दशम स्कंधकथा का आयोजन किया गया। वक्तापद की शोभा शा.स्वा. विजयप्रकाशदासजी (वाली)ने बढाई। ता. २६-८-१५ को महापूजा का आयोजन किया गया। १९० जितने भक्तोंने महापूजा का लाभ लिया । षोडशोपचार पूर्वक श्रीहरि का पूजन किया गया। समग्र उत्सव के यजमान पटेल प्रबोधभाई पूंजाभाई (विरावाडा वाले) का परिवार था।

(आर.बी. पटेल - हिंमतनगर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर माणेकपुर (चौधरी) श्री गणपति उत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा स.गु. देव स्वामी (मूलीवाले) के मार्गदर्शन से, समस्त माणेकपुर गाँव के हरिभक्तों के साथ-सहयोग से भादो शुक्लपक्ष-४ को मंदिर में गणपति उत्सव धूमधाम से मनाया गया।

इस प्रसंग पर माणसा मंदिर के महंत स्वामी नंदकिशोरदासजी पधारे थे। सभा में युवानो को सत्संग में प्रवृत्त रहने हेतु तथा नित्य मंदिर का लाभ लेने की सलाह दी गई। माता-पिता की सेवा करना तथा व्यसन-व्यभिचार से दूर रहने हेतु समझाया गया । श्री गणपतिदादा की महिमा कहकर आरती की गयी । आज के प्रसंग के यजमान (सभा संचालक) प.भ. डाह्याभाई शंभुभाई चौधरी थे। (कोठारीश्री)

मूली प्रदेश के सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर मूली में जन्माष्टमी उत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा स.गु. महंत स्वामी श्यामसुंदरदासजी की प्रेरणा से ता. ५-६-१५ सावन कृष्ण पक्ष-८ को श्री कृष्ण जन्माष्टमी को श्री स्वामिनारायण मंदिर मूली में धूमधाम से उत्सव मनाया गया। सावन महिने में श्रीमद् भागवत दशम स्कंधकथा शा.स्वा. घनश्यामप्रकाशदासजी गुरु शा.स्वा. सूर्यप्रकाशदासजी ने की। मूली मंदिर के आदरणीय संतो द्वारा कथा की पूर्णाहुति की गयी। प्रासंगिक सभा में पू. महंत स्वामी, कोठारी कृष्णवल्लभदासजी, स.गु. शा.स्वा. नारायणप्रसाददासजी, चराडवा महंत स्वामी तथा स.गु. स्वामी भक्तिहरिदासने श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का माहात्म्य तथा उत्सव की परंपरा का ज्ञान दिया। सभा संचालन शैलेन्द्रसिंह झालाने किया था । समग्र सेवा में कोठारी व्रज स्वामी, हरिकृष्ण स्वामी तथा भरत भगत उपस्थित रहे। (शैलेन्द्रसिंह झाला)

श्री स्वामिनारायण मंदिर सुरेन्द्रनगर सावन महीने में कथा-झुलोत्सव का आयोजन

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा स.गु. महंत स्वामी प्रेमजीवनदासजी की प्रेरणा से सावन कृष्णपक्ष-९ से सावन कृष्ण पक्ष अमावस्या

तक श्रीमद् सत्संगिजीवन ग्रंथ पारायण शा.स्वा. प्रेमवल्लभदासजीने की।

सुरेन्द्रनगर श्री स्वामिनारायण मंदिर में आश्विन कृष्ण पक्ष-२ से सावन कृष्ण पक्ष-२ तक ठाकुरजी को विभिन्न प्रकार के झुलोत्सव बनाकर उसमें झुलाया गया । थर्मोकोल, पंचमेवा, अनाज, आदि भिन्न भिन्न प्रकार के झुलोत्सव के दर्शन अंतिम पांच दिवस में करवाये गये। समग्र आयोजन श्री नरनारायणदेव युवक मंडल के पंकजभाई के मार्गदर्शन से युवको तथा बालकोने कुशलता पूर्वक किया। (शैलेन्द्रसिंह झाला)

प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा सुरेन्द्रनगर मंदिर के पू. महंत स्वामी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर सुरेन्द्रनगर के आगामी दशाब्दी महोत्सव के उपलक्ष्य में किये गये कार्यक्रम

मूली के गाँवो में जाहेर सभाओं का आयोजन

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा सुरेन्द्रनगर मंदिर के महंत स्वामी के संकल्प से आगामी दशाब्दी महोत्सव के उपलक्ष में ५१ गाँवो में सत्संग सभा के आयोजन हेतु मूली के भद्रेशी, मेधाण, सरा, अखीयाणा, चांचावदरड़ा, देदादरा, कुतलपुर, चराडवा, भक्तिनगर, घनश्यामनगर, खेराली, रामपरा, नरनारायणनगर, आदि गाँवो में सभा का आयोजन हुआ जिस में व्यसन मुक्ति, वृक्षारोपण, पानी का दुरपुयोग न करना जैसे कार्यक्रम का समावेश किया गया । माता-पिता की सेवा उपर प्रवचन शा.स्वा. श्रीजीप्रकाशदासजी (हाथीजण), कोठारी स्वामी कृष्णवल्लभदासजी, शा.स्वा. प्रेमवल्लभदासजी, नित्यप्रकाश स्वामी तथा रवि भगतने किया। समग्र सभा संचालन शैलेन्द्रसिंह झालाने किया। (शैलेन्द्रसिंह झाला)

गढपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर में धुन का आयोजन

ता. ३०-८-१५ को गढपुर दादा खाचर के दरबारगढ में श्री गोपीनाथजी हरिकृष्ण महाराज के सानिध्य में १२ घंटे की अखंड श्री स्वामिनारायण महामंत्र धूनका आयोजन किया गया । बड़ी संख्या में हरिभक्तोंने धून में भाग लिया । इस प्रसंग पर एस.पी. स्वामी, कोठारी शा. घनश्याम स्वामी, गांधीनगर (से-२) के महंत छोटे पी.पी. स्वामी, शा.स्वा. श्रीजीप्रकाशदासजी (हाथीजण), शा.स्वा. प्रेमवल्भदासजी, नित्यप्रकाश स्वामी आदि संतगण धून में उपस्थित रहे। समग्र सभा का संचालन शैलेन्द्रसिहं झालाने किया । समग्र आयोजन कोठारी स्वामी कृष्णवल्लभदासजीने किया था। (शैलेन्द्रिह झाला)

जूनागढ श्री स्वामिनारायण मंदिर में धून का आयोजन

श्री स्वामिनारायण मंदिर जूनागढ में श्री राधारमण देव के शुभ सानिध्य में श्री स्वामिनारायण महामंत्र की १२ घंटे की धून का आयोजन किया गया । धून में जूनागढ मंदिर के पू. कोठारी स्वामी, पूर्व महंतश्री के.पी. स्वामी, शा. श्रीजी स्वामी (हाथीजण) कोठारी स्वामी कृष्णवल्लभदासजी आदि संतगण उस्थित थे । कोठारी स्वामी, राम स्वामी तथा घनश्याम स्वामीने सुंदर व्यवस्था की । समग्र सभा का संचालन श्री शैलेन्द्रसिंह झालाने किया। (शैलेन्द्रसिंह झाला)

प.पू. बड़ी बहनजी की स्मृति में मूली के गाँवो में सावन महिने में अखंड महामंत्र धून का आयोजन

प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से पू. अ.सौ. बड़ी बहनजी की स्मृति में पवित्र सावन महीने में मूली के कुल ३० गाँवो में १२-१२ घंटे की अखंड श्री स्वामिनारायण महामंत्र धून का आयोजन किया गया। साथ ही समूह महापूजा भी की गयी। सभी हरिभक्तोंने इस अवसर का लाभ लिया। समग्र आयोजन-व्यवस्था स्वामी निलकंठप्रसाददासजी तथा शा. दिव्यप्रकाशदासजीने की।

सावन कृष्ण पक्ष-१ से सावन कृष्ण पक्ष अमावस्या तक ता. १५-८-१५ से ता. १३-९-१५ तक सरा, सापकडा, घनश्यामपुर, हलवद, जूना मंदिर, सूर्यनगर, स्वामिनारायण नगर, श्रीजी नगर, लीलापुर, भक्तिनगर, नरनारायणनगर, घनश्यामनगर, हलवद नवा मंदिर, रणजीतगढ, मयुरनगर, घाटीला, मोरबी नया मंदिर, ध्रांगध्रा, जसापर, नारोपाणा, अंकेवालीया, धोली, रामगढ, ईश्वर, मेथाण, टींबा, खारवा, खोलडीयाद, नटवरगढ, लीलापुर, लखतर में की गयी।

(प्रवीणभाई घनश्यामभाई - हलवद)

श्री स्वामिनारायण मंदिर श्रीजीनगर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर श्रीजीनगर में ता. ५-८-१२ सावन कृष्ण पक्ष-८ जन्माष्टमी को समूह में धून-कीर्तन-भक्ति की गयी। रात्रि में १२ बजे जन्मोत्सव आरती के बाद रास-गरबा, मटकी फोड, कार्यक्रम श्री घनश्याम बाल मंडनले किया। समस्त गाँव वालोने प्रसाद ग्रहण किया। (जिज्ञेश राठोड)

श्री स्वामिनारायण मंदिर मोरबी भव्य झुलोत्सव दर्शन

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर मोरबी में महंत शा.स्वा. भक्तिनंदनदासजी तथा शा. विश्वविहारीदासजी की प्रेरणा से सत्संगी बहनो के प्रवाससे सावन महिने में नित्य नये कलात्मक झूलोत्सव में बालमुकुन्द भगवान को झुलाया गया।

गांव की मूल संस्कृति, श्री नीलकंठवर्णी के लीलाचरित्र लाईटींग शो, प्रोजेक्ट शो, महाप्रसाद देते हुए ठाकुरजी स्वंय भू अभिषेक के साथ हिमालय दर्शन जैसे कार्यक्रमोका हजारो भाविकोने दर्शन करके लाभ लिया। प.पू. आचार्य महाराजश्री की कृपा से उत्साही युवान महंत स्वामी की प्रेरणा से तथा सां. रामबाई और उषाबाई द्वारा सत्संग की प्रवृत्ति में वृद्धि हो रही है। निष्ठावान हरिभक्त प.भ. हरिभाई पटेल श्रीजी सिरामीक ग्रुप आदि अनेक हरिभक्तों के सहयोग से सुंदर कार्यक्रमो का आयोजन किया जाता

है। (कोठारी स्वामी)

भूज श्री स्वामिनारायण मंदिर में झुलोत्सव के दर्शन

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री आशीर्वाद से मोरबी मंदिर में महंत शा.स्वा. भक्तिनंदनदासजी और शा.स्वा. विश्वविहारीदासजी स्वामी आदि संतो द्वारा सत्संग की प्रवृत्तिओं का आयोजन किया जाता है। मूली के झालावाड - मच्छुकांठा तथा हालार के कुल ९०० हरिभक्तोंने १३ बसों द्वारा भूज (कच्छ) प्रस्थान किया था। एक दिवस के आयोजन में झुलोत्सव दर्शन, पंच विधिदर्शन में समुद्र स्नान, सभा, मांडवी, गंगाजी दर्शन, भूज मंदिर में श्री नरनारायणदेव के दर्शन आदि कार्यक्रम का समावेश किया था। महंत स्वामीने सभी संतो-हरिभक्तों को आशीर्वाद दिये। स्मृति मंदिर तथा अंजार मंदिर में झुलोत्सव के दर्शन किये। यात्रा में बहनो के साथ सां. रामबाई तथा उषाबाई भी थी। प.भ. हरिभाई पटेल, तुलसीभाई आदि सिरामीक ग्रुप की सेवा प्रेरणारुप थी।

(महंत शा.स्वा. भक्तिनंदनदास - मोरबी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर रनतपर पारायण

प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाश्री की आज्ञा से तथा कंचनबहन बाबुभाई अडालजा के संकल्प से उनकी मातुश्री अरतबहन मोहनभाई अडालजा के स्मरणार्थ पुरुषोत्तम महिने में ता. ८-७-१५ से १४-७-१५ तक स.गु. कोठारी स्वामी हरिकृष्णदासजी (एप्रोच बापुनगर मंदिर) ने निष्कुलानंद स्वामी द्वारा रचित हरिबल गीत का गान किया। सुरेन्द्रनगर मंदिर के कोठारी स्वामी कृष्णवल्लभदासजी आदि संतोने पधारकर आशीर्वाद दिये। पार्षद कालु भगतने सुंदर सेवा की।

(पा. कालु भगत - रतनपर)

विदेश सत्संग समाचार

श्री कच्छ सत्संग श्री स्वामिनारायण मंदिर नाईरोबी

श्री कच्छ सत्संग स्वामिनारायण मंदिर - नाईरोबी की स्थापना ई.स. १९५४ में किरिन्यागा रोड पर हुई थी। मंदिर में हरिभक्तों की संख्या में वृद्धि होने के कारण अब मंदिर छोटा पड़ रहा है। भूज मंदिर के संतो तथा प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से नाईरोबी के लंगाटा विस्तार में हरिभक्तों के साथ सहयोग से १० एकर जमीन का संपादन किया गया है।

मंदिर का कार्य अच्छे से किया जा रहा है। साथ ही हरिभक्तों के रहने हेतु फ्लेट का भी निर्माण पूर्णता पर है। सभी हरिभक्त तन, मन, धन से सेवा कर रहे हैं।

आगामी वर्ष २०१६ ओगस्ट महिने में ता. ५-८-१६ से ता. १३-८-१६ तक भव्याति भव्य "श्री नरनारायणदेव नूतन मंदिर महोत्सव" मनाया जायेगा। इस महोत्सव की तैयारीयाँ भी आरंभित हो गयी है। प्रातः से देर साम तक रोज कार्यक्रमो का आयोजन किया जायेगा। कथा पारायण, के साथ शोभायात्रा, पोथीयात्रा, सास्कृतिक कार्यक्रम, महाविष्णुयाग, चतुर्वेद पारायण, राजोपचार आदि कार्यक्रम भी किये जाये। अहमदाबाद से प.पू. आचार्य महाराजश्री भी परिवार सहित पधारेगे। भुज से भी संतगण पधारेगे। अहमदाबाद के सत्संगीजनो को इस महोत्सव में पधारने हेतु आमंत्रित करते हैं। (मंत्रीश्री नारणभाई गोरसीया)

कोलोनीया (अमेरिका) मंदिर का भव्य दशाब्दी महोत्सव

ता. ४-९-२०१५ के शुभ अवसर पर अमेरिका के न्युजर्सी राज्य के कोलोनीया सीटी में टेम्पल-वे रोड पर अहमदाबाद जैसा ही भव्य श्री स्वामिनारायण मंदिर का निर्माण हुआ है। विश्व में सर्व प्रथम ऐसा अहमदाबाद श्री स्वामिनारायण मंदिर जैसा हुबहु मंदिर कोलोनीया सीटी में है। इसीलिए उसे "अहमदाबाद धाम" की उपमा दी गयी है।

ता. २२-८-१५ से ३०-८-१५ तक नवदिवसीय सुंदर दशाब्दि महोत्सव मनाया गया। ता. २२-८-१५ शनिवार की साम ४-३० बजे भव्य पोथीयात्रा निकाली गयी. साम को ५-०० से ८-०० तक श्री योगेन्द्रभाई सुदंर शैली में दशम स्कंधका भक्ति भावना का रसपान सभी को करवाया।

शुक्रवार ता. २८-८-१५ की साम ३ से ५ तक विशाल शिवलींग की प्रतिष्ठा करके रुद्राभिषेक का आयोजन किया गया। उसी दिन साम को कथा की पूर्णाहुति की गयी।

शनिवार ता. २९-८-१५ को पूर्णिमा को कोलोनिया मंदिर का कार्यक्रम स्मरणात्मक बन गया। आई.एस.एस.ओ. चेप्टर अमेरिका से ग्यारह संतगण, अहमदाबाद से पू. पी.पी. स्वामी (जेतलपुर), पू. पूर्णप्रकाश स्वामी (धोलका) पधारे थे। प.पू. बड़े महाराजश्री प.पू. आचार्य महाराजश्री, पू. लालजी महाराजश्री, प.पू. बड़ी गादीवालाश्री, प.पू. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाश्री, पू.श्रीराजा, पू. बिंदुराजा समेत समग्र धर्मकुल परिवार उपस्थित था।

सावन पूर्णिमा (रक्षाबंधन) के इस शुभ दिवस पर सुबह से ही भक्तजनों की भीड़ आने लगी। सुबह ७-३० बजे से मुख्य यजमानो द्वारा अभिषेक महापूजा की गयी। सुबह ९-०० बजे श्रीहरि के तीनों स्वरुपो का आगमन हुआ। श्री नरनारायणदेव का जयघोष समस्त परिषर में व्याप्त हो गया।

श्री घनश्याम महाराज तथा श्री नरनारायणदेव की शोभायमान मूर्ति का षोडशोपचार पूजन विधिपूर्वक किया गया। केसर-चंदन युक्त जल से स्नान का आरंभ किया गया। अमेरिका में भिन्न-भिन्न फलेवर का दहीं मिलता है। उसी प्रकार भिन्न-भिन्न प्रकार के फलों के रस भी मिलते है। इसी लिए श्री नरनारायणदेव तथा श्री घनस्याम महाराज को स्ट्रोबेरी, ओरेन्ज, एपल, पाईनेपल प्रकार के दहीं तथा फलों के रसों से स्नान करवाया गा। श्री घनश्याम महाप्रभु की श्वेत मूर्ति पर भिन्न दहीं और फलों के रस के

रंगो से मेधधनुष की झाँकी का दर्शन प्रतीत हो रहा था।

एक चमत्कारिक घटना ऐसी बनी की जब प.पू. बड़े महाराजश्री सफरजन के रस से श्री घनश्याम महाराज का अभिषेक कर रहे थे तब भगवान के कोमल चरण कमल पर स्वयं ही सफरजन की आकृति बन गयी। इस घटना का फोटो भी खिंचा गया।

विशाल मंदिर में बैठकर सभी भाई-बहन शांति से महाभिषेक के दर्शन कर रहे थे।

सुबह ११-०० से ११-३० तक आई.एस.एस.ओ. चेप्टर अमेरिका से पधारे संतोने प्रवचन किया। अहमदाबाद से पधारे पू. पी.पी. स्वामी (जेतलपुर) तथा पू. पूर्णप्रकाश स्वामीने भी सुंदर प्रवचन किये।

''त्रिवेणी संगम में स्नान करने से शरीर और मन की शुद्धि होती है। उसी प्रकार श्रीहरि के अपर स्वरुपों के त्रिवेणी दर्शन से तो मन भी शुद्ध हो जाता है। कोलोनीया मंदिर का सभागृह मानो दादा खाचर का दरबार हो गया हो।'' संतोने प्रवन किया। धर्मकुल परिवार का भी पूजन किया गया।

पू. पी.पी. स्वामीने प्रवचन में कहा कि अमेरिका में स्थापित हमारे सभी मंदिरो में श्रीहरि साक्षात् बिराजमान है। यहाँ आनेवाले हरिभक्तों में बिना जाति के भेदभाव के दर्शन करने वाले सभी मुमुक्षु के संकल्प श्रीहरि सदैव इसी तरह पूर्ण करते रहे। ऐसी प्रार्थना।

अगस्त २०१५ को श्री स्वामिनारायण अंक में अमेरिका के सत्संगी ओक्टेवियो मेजिया की वात लिखी है, वह अमेरिका का मुमुक्षु भी आया था। उसके मस्तक पर तिलक-चन्दन सुशोभित हो रहा था। प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू. आचार्य महाराजश्री पुष्पहार पहनाकर आशीर्वाद प्रदान किया था। प.पू. बड़े महाराजश्री अपने आशीर्वचन में समझाया कि शिक्षापत्री की आज्ञा का पालन जो करता है वहीं सुखी होता है, जो आज्ञा का पालन नहीं करता उसे भी पालन करने की कोशिष करनी चाहिए। सतत जो सत्संग में अपनी बुद्धि रखेगे उसी को सुख तथा शांति मिलेगी।

पू. लालजी महाराजश्री अपने आशीर्वचन में बताया कि हम सभी एक ही परिवार के हैं। इस तरह आत्मीय वचन बोले थे। प.पू. आचार्य महाराजश्री अपने आशीर्वचन में बताया कि शिक्षापत्री के १० वें श्लोक में महाराजने हम सभी को आपस में प्रीति करने की वात की है। शिक्षापत्री की आज्ञा का पालन करने की वात की है। सत्संग में एक सूत्रता - आत्मीयभाव रहेगा तो सर्व विधसुख की प्राप्ति होगी। श्री घनश्याम महाराज, श्री नरनारयणदेव अपने मा-बाप हैं। इस दशाब्दी महोत्सव के आयोजन में तन, मन, धन की सेवा करने वाले सभी भक्तों को हमारा हार्दिक आशीर्वाद।

दोपहर में अन्नकूट की आरती की गयी। बाद में श्री नरनारायणदेव के समक्ष अन्नकूट का भोग लगाया गया। कोलोनिया मंदिर का प्रांगण बहुत बड़ा है। ४०० जितनी गाडिया पार्क हो सकती है। यहीं पर सभी के भोजन की व्यवस्था की गयी थी। इस दशाब्दी में ध्यानाकर्षक वाते नीचे के अनुसार थी -

(१) विगत पांच वर्षो से महंत के रुप में सेवा करने वाले स्वा. धर्मकिशोरदासजी की सेवा सराहनीय थी। (२) वर्ष के १२ महीने पांच वर्ष से लेकर ७० वर्ष तक आबाल वृद्धि नरनारी में सत्संग दिखाई देता है। (३) दशाब्दी महोत्सव को ध्यान देकर दशाब्दी महोत्सव स्मृति अंक प्रकाशित किया गया था। जिस में मंदिर की जमीन ग्रहण से लेकर अद्यावधितक का सविस्तार निरुपण किया गया है। सन २००५ में जब मंदिर की प्रतिष्ठा की गयी थी उस समय का लालजी महाराज का फोटो उस पत्रिका में है, उस समय लालजी महाराज बहुत छोटे थे।(४) यहाँ के मंदिर में विराजमान श्रीहरि सभी को आत्यन्तिक सुख प्रदान करते रहते हैं। सभी के संकल्प को पूरा करते रहते हैं।

दशाब्दी महोत्सव इस तरह मनाया गया कि जो भी इस उत्सव में भाग लिया वे धन्य भागी हुये। आज भी उन के मन से वह झांकी विस्मृत नहीं होती। (अतुल भानुप्रसाद पोथीवाला)

कोलोनिया मंदिर में महामंत्र धून

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से यहाँ के महंत स्वामी की प्रेरणा से शनिवार को विकेन्ड में सायंकाल ५ से ८ बजे तक संत-हरिभक्तों के सहयोग से श्री स्वामिनारायण महामंत्र धुन-कीर्तन का आयोजन किया गया था। इस प्रसंग पर ५८ जितने हरिभक्त मंत्रजप में सहयोग किये थे। उन सभी का सन्मान किया गया था। श्रावण मास में झूले को सजाकर उस पर प्रभु को झुलाया गया था। स्वामी ने हरिभक्तों को चातुर्मास में विशेष नियमपालन करने की वात की - और सभी ने उसका पालन किया था। (प्रवीण शाह)

मूलीधाम लुईवील कंटकी में प्रथम पाटोत्सव

आई.एस.एस.ओ. श्री स्वामिनारायण मंदिर कंटकी स्टेट की लुईवील टाउन में प्रथम पाटोत्सव को धूमधाम से मनाया गया था।

इस प्रसंग पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री संत मंडल के साथ पधारे थे।

पाटोत्सव के प्रसंग पर श्रीमद् भागवत पारायण शा.स्वा. हरिवल्लभदासजी के वक्तापद पर संपन्न हुआ था।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से ठाकुरजी का षोडशोचार पूजन, अन्नकूट आरती, कथा यज्ञ की पूर्णाहुति इत्यादि कार्यक्रम किये गये थे। सभा में स्वा. धर्मवल्लभदासजी, महंत हरिवल्लभदासजी, स्वा. व्रजवल्लभदासजी पुजारी हरिनन्दनदासजीने कथा का सुंदर लाभ दिया था। इस प्रसंग पर भरतभाई चौधरी, डाह्याभाई, महेन्द्रभाई (सीनसीनाटी) तेजसभाई (ईन्डिया) रामाभाई (मोखासण) पियुषभाई,

वासुदेवभाई, जयप्रकाशभाई ने पाटोत्सव में उत्तम सेवा का कार्य किया था । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था । सभी यजमानों को चांदी की कंठी तथा मूर्ति भेंट में देकर संमान किये थे ।

प्रेसीडेन्ट श्री विष्णुभाई पटेलने सुंदर व्यवस्था का आयोजन किया था । सभा में पू. पी.पी. स्वामी, सूर्यप्रकाश स्वामी, भक्ति स्वामी, शांति स्वामी की प्रेरणा के बाद प.पू. आचार्य महाराजश्रीने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था ।(प्रवीण शाह)

श्री स्वामिनारायण मंदिर जेतलपुरधाम चेरीहील में ८ वाँ पाटोत्सव

यहाँ के जेतलपुरधाम में ८ वाँ पाटोत्सव २८ से ३० अगस्त तक विकेन्ड में प.पू. बे़ महराजश्री, अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा प.पू. बड़ी गादीवालाजी, प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाश्री, पू.श्रीराजा इत्यादि धर्मकुल, पार्षद तथा इसो चेप्टरों के संतो के सानिध्य में धूमधाम से मनाया गया था । इस पाटोत्सव प्रसंग पर श्रीहरि की लीलाओं का वर्णन सत्संगिभूषणदासजीने किया था।

श्री स्वामिनारायण मंदिर टोरडा
नया मोबाईल : ९८७१९९३५०९

रविवार को प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के साथ पिनाकीन जानी तथा संतो द्वारा ठाकुरजी का षोडशोपचार किया गया था । अन्नकूट की आरती प.पू. महाराजश्री तथा प.पू. लालजीमहाराजश्रीने की थी । इस प्रसंग पर पाटोत्सव के अवसर पर सभी यजमानों को सत्कार किया गया था । धर्मकुल का पूजन यजमानो द्वारां किया गया था । संतो की प्रेरकवाणी के बाद प.पू. आचार्य महाराजश्रीने अपने आशीर्वाद में बताया कि यहाँ पर जेतलपुर के रेवती बलदेवजी साक्षात् विराजमान है । सभी मनोकामना यहाँ से पूर्ण होगी । प.पू. लालजी महाराजश्री युवानो को आशीर्वाद देते हुए बताया कि सभी युवान मंदिर के प्रत्येक कार्य में सहभागी बनते रहें । यहाँ के प्रत्येक कार्यक्रमो में सभी लोग भाग लें, ऐसा अनुरोधकिया था । अन्त में सभी लोग अन्नकूट का प्रसाद लेकर प्रस्थान किये थे । (प्रवीणभाई शाह)

श्री नरनारायणदेव महोत्सव का DVD सेट श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर साहित्यकेन्द्र में तथा श्री स्वामिनारायण म्युजियम में मिलेगा ।

श्री स्वामिनारायण मंदिर स्ट्रेधाम (आई.एस.एस.ओ.) वीसवां वार्षिक पाटोतसव तथा आई.एस.एस.ओ. (यु.के.) रजत जयंती महोत्सव

भगवान श्री स्वामिनारायण की असीम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण मंदिर स्ट्रेधाम में विराजमान श्री सहजानंद स्वामी, श्री नरनारायणदेव, श्री लक्ष्मीनारायणदेव, श्री राधाकृष्णदेव की प्रतिष्ठा को २० वर्ष पूर्ण होते ही विदेशी धरती पर आनेवाली पीढियों में संस्कार बने तथा धर्म का सिंचन हो इस हेतु से प.पू. बड़े महाराजश्रीने **(I.S.S.O.) International Swaminarayan Satsang Organization** की **U.K.** में स्थापना की उसके २५ वर्ष पूर्ण होते ही ता. ६-९-१५ से १२५-१५ तक उत्सव मनाया गया । महोत्सव में श्रीमद् भागवत सप्ताह पारायम स्वा. रामकृष्णदासजी के वक्तापद पर संपन्न हुआ । इसके साथ अन्नकूट, अभिषेक, रुक्मिणी विवाह, श्री कृष्ण जन्मोत्सव, कीर्तन इत्यादि कार्यक्रम मनाये गये । प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू. आचार्य महाराजश्री इस कार्यक्रम में उपस्थित होकर शोभा बढाये थे । सात दिन के कार्यक्रम को प्रकाशित किया गया था । **U.K.** के हरि मंदिरो से भक्त तन, मन, धन से सहयोग किये थे । प.पू. आचार्य महाराजश्री अपने आशीर्वाद में भक्तों की सेवा की प्रसंस्त की थी । और भी सत्संग का विकाश हो ऐसा आशीर्वाद दिया था ।

हरिभक्तों के आमंत्रण पर अमदावाद मंदिर के महंत स्वामी श्री हरिकृष्णदासजी तथा स.गु. ब्र. राजेश्वरानंदजी, शा. स्वा. नारायणमुनिदासजी पधारे थे ।

महंत स्वामी भी प्रतिदिन आशीर्वचन का लाभ देते थे । **I.S.S.O.** के प्रेसिडेन्ट श्री अशोकभाई पटेलने २५ वर्ष के सफर में सहयोग देने वाले सभी का आभार माना था । स्ट्रेधाम मंदिर के प्रेसिडेन्ट श्री डॉ. अमरशीभाई पटेल ने यजमानो का तथा स्वयं सेवको का आभार माना था ।(प्रेसि. डॉ. अमरतभाई)

नूतन वर्ष का केलेन्डर छपवाने के लिये (दाता का नाम)

सन २०१६ के सर्वोपरि श्री घनश्याम महाराज तथा श्री नरनारायणदेव के अलौकिक केलेन्डर में अपने धन्धा - उद्योग का नाम छपवाने के लिये नीचे के मोबाईळ नं. का संपर्क करें - २५० नंग कलेन्डर कम से कम छपाना होगा। कीमत १० रुपये में १ नंग। मोबाईल : ९८२४०३३१७५, ९९२५००७६६२, ९६६२०२१८२९, ९७२५४४९२८८

२०१६ वर्ष का केलेन्डर तथा संवत २०७२ वर्ष का डट्टा प्रकाशित हो गया है

समस्त सत्संग को ज्ञापित करना है कि श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर की तरफ से सं. २०७२ वर्ष का डट्टा तथा सन २०१५-१६ वर्ष का अलौकिक भगवान के स्वरुप का केलेन्डर प्रकाशित हो गया है।

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर के साहित्य केन्द्र पर उपलब्धहै।

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर : स.गु. शा.स्वामी केशवचरणदासजी गुरु गवैया स्वामी भक्तिजीवनदासजी ता. ३-९-१५ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए मूलीधाम में अक्षरनिवासी हुये हैं(पू. जे.पी. स्वामी मूली)

अमदावाद (मल भडीयाद-शिकागो) : प.भ. जगजीवनभाई डाह्याभाई पटेल (जे.डी. पायलवाला) के सुपुत्र प.भ. जीतेन्द्रभाई जगजीवनभाई पटेल ता. १६-९-१५ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुये हैं।

कन्नीपुर : प.भ. पटेल शारदाबहन भूलाभाई (उम्र ९२ वर्ष) ता. २५-९-१५ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुये हैं।

ट्रेन्ट : प.भ. पटेल भाईलालभाई माधवजीदास ता. ८-८-१५ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुये हैं।

वहेलाल : प.भ. सुरेशभाई अंबालाल पटेल (उम्र ५७ वर्ष) ता. ५-९-१५ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुये हैं।

महेसाणा : यहाँ के मंदिर में सेवा करनेवाले प.भ. बाबुभाई जोईताराम मोदी के सुपुत्र प.भ. जगदीशकुमार बाबुलाल मोदी (उम्र ४७ वर्ष) ता. १६-८-१५ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुये हैं।

अमदावाद : प.भ. मणीभाई करशनभाई पटेल (कुंडाल-कडी) के सुपुत्र श्री नरेन्द्रभाई मणीभाई पटेल (उम्र ५५ वर्ष) ता. २५-८-१५ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुये हैं।

झुंडाल : प.भ. ईश्वरभाई बहेचरभाई पटेल (उम्र ९० वर्ष) ता. २-९-१५ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुये हैं।

रामनगर (ता. कलोल) : प.भ. पटेल मंगुबहन अंबालाल (उम्र ७८ वर्ष) ता. १२-९-१५ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासिनी हुई हैं।

डोंबीवली मुंबई : प.भ. महेन्द्रभाई भगवानजीभाई मीराणी ता. १८-८-१५ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुये हैं।

राणीप-अमदावाद : यहाँ मंदिर के ट्रस्टी तथा एकाउन्टन्ट प.भ. जयेन्द्रभाई मनुभाई शाह ता. ५-९-१५ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुये हैं।

बालवा : प.भ. मोतीजी गोवाजी चौधरी (उम्र ८२ वर्ष) ता. १२-९-१५ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुये हैं।

भाऊपुरा : प.भ. मनुभाई रणछोडदास पटेल ता. १९-९-१५ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुये हैं।

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्रीस्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित।

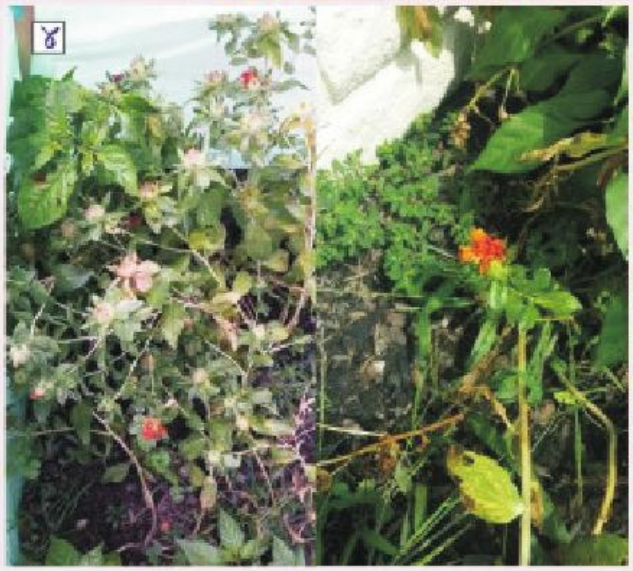

(१) अपने स्ट्रेधाम (यु.के.) मंदिर में २० वें पाटोत्सव प्रसंग पर ठाकुरजी की आरती उतारते हुये प.पू. आचार्य महाराजश्री साथ में अमदावाद मंदिर के महंत स्वामी हरिकृष्णदासजी तथा विस्लडन मंदिर के प्रमुख प.भ. मनजीभाई तथा हेरो मंदिर के प्रमुख प.भ. विश्रामभाई ।(२) सभा में दर्शन देते हुये प.पू. बड़े महाराजश्री ।(३) स्ट्रेधाम मंदिर में स्वयं सेवको के साथ प.पू. आचार्य महाराजश्री ।(४) सोविनियर हस्ताक्षर करते हुये प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. आचार्य महाराजश्री ।(५) कथा श्रवण कराते हुये स.गु.शा.स्वा. रामकृष्णदासजी ।

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581/15-17 issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2017

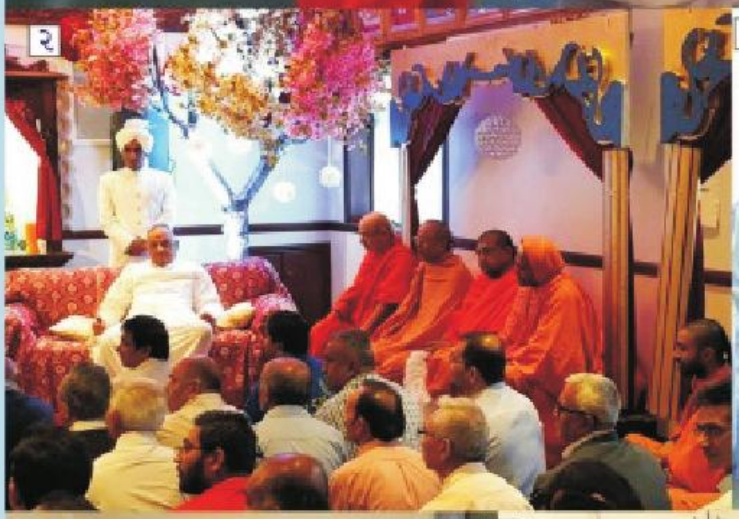

(१) अपने स्ट्रेधाम (यु.के.) मंदिर में २० वें पाटोत्सव प्रसंग पर ठाकुरजी की आरती उतारते हुये प.पू. आचार्य महाराजश्री साथ में अमदावाद मंदिर के महंत स्वामी हरिकृष्णदासजी तथा विस्लडन मंदिर के प्रमुख प.भ. मनजीभाई तथा हेरो मंदिर के प्रमुख प.भ. विश्रामभाई ।(२) सभा में दर्शन देते हुये प.पू. बड़े महाराजश्री ।(३) स्ट्रेधाम मंदिर में स्वयं सेवको के साथ प.पू. आचार्य महाराजश्री ।(४) सोविनियर हस्ताक्षर करते हुये प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. आचार्य महाराजश्री ।(५) कथा श्रवण कराते हुये स.गु.शा.स्वा. रामकृष्णदासजी ।

श्री स्वामिनारायम मंदिर अल्हाबाद में मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव दि. २६ से ३० नवम्बर-२०१५

Praful Kharsani